अगम पुर सूरत लेउं सजाय ॥ २० ॥
चरन में राधास्वामी के धाऊं ।
प्रेम भर आरत उन गाऊं ॥ २१ ॥

इति

दूर वसु छविउर धार रहूं । चरन में नित लौलाय रहूं ॥१६॥
सुरत से सुनूं शब्द धुन सार । दरस गुरु ताकूं गगन मंझार
दसमदर झांकूं अति कर प्यार ।
भंवर चढ़ पकडूं वंसी धार ॥ १८ ॥
अमरपुर पहुंचूं सतगुर पास ।
करूं धुन वीना संग विलास ॥ १९ ॥
पुरुष का दरश अलख पुर पाय ।

कहूं क्या महिमां सतसंग सार । पिरेमी बैठे सोभा धार ॥१०॥
विरह की अगनी रहै सुलगाय । दरस गुरु मोह रहे अधिकाय
प्रेम की क्यारी सींचें नित्त । सुरत मन धुन रस भौजें नित
भोग जग तज कर हुये न्यारे । वार तन मन हुये गुरु प्यारे १३
भाग बढ़ उनका क्या गाऊं । दया पर गुरु केवल जाऊं ॥१४॥
करूं मैं अरज़ी दोऊ कर जोड़ ।
चरन में लीजे मेरा चित अस जोड़ ॥ १५ ॥

संग गुरु चाहूं वारंवार। करत रहूं सेवा धर धर प्यार ॥ ४ ॥
दरश बिन तड़प रहा मन मोर ।
लखूंकस राधास्वामी छवि चित चोर ॥ ५ ॥
रैन दिन चिंता मोहिं सताय। सुरत से गहूं चरन गुरु जाय ६
मिले जब राधास्वामी दरशन सार। लिपट रहूं चरनन से कर प्यार
मगन होय गुरु आगे नाचूं। उमंग अंग गुरु चरनन राचूं ॥८॥
निरख छवि फूल रहूं मन में। समावत नहीं हरख तन में ॥९॥

वहां से राधास्वामी धाम गई। चरन में राधास्वामी मेल लई॥
रहूं नित अस्तुत राधास्वामी गाय। दिया मेरा अचरज भाग जगाय
उमंग अंग आरत वहां करती। नाम राधास्वामी नित भजती॥

प्रे० बा० १ नं० श० ८४ (शब्द ९४) सफ़ा ५२७

गुरू पै वार रही तन मन। होय रही चरन धूर सत जन ॥१॥
प्रीत मेरी बढ़त रही दिन २। मेहर गुरु पाय रही छिन २॥२॥
रूप गुरु झांक रही पुन २। वचन हिये धार रही चुन २॥ ३ ॥

दूत सब दीजे घट से टार। मेहर से लीजे मन को मार ॥१२॥
चढ़ूं तब देखूं घट परकाश। सहस दल जाऊं पाऊं बास १३
वहां से निरखूं त्रिकुटी धाम। करूं गुरु चरनन में बिस्राम ॥
सुन्न में हंसन संग मिलाप। करूं और पाऊं अपना आप ॥१५॥
भंवर चढ़ सुनती सोहंग सार। लगा अब मुरली धुन से प्यार॥
सतपुर किये सतगुरु दरशन। परसकर सतपुरुष चरनन॥१७
चली फिर आगे को पग धार। अलख और अगम किया दीदार

मिले मोहिं राधास्वामी गुरु साईं। वार देउ तन मन उन पाईं
दया बिन बनत न कोई काम। मेहर उन मांगूं आठों जाम ॥६
शब्द बिन पंथ चला नहीं जाय।दिया मोहिं सतगुरु भेद जनाय
सुरत मन घेरो घट माहीं। मिटे तब काल करम छांहीं ॥८॥
करो अब राधास्वामी मेरी सहाय। प्रेम देदीजे सुरत चढ़ाय
रहुं मै जग में नित्त उदास। बिना तुम चरन नाहिं कोई आस
सुरत मन विनय करै तुम पास। दयाकर दीजे गगन निवास

ऊंच से ऊंचा है यह धाम। संत बिन नहीं पावे बिस्रामं
रहा मैं जग में नीच नकार। दया कर राधास्वामी लीन उबार

प्रे० बा० १ नं० श० ७५ (शब्द ९३) सफ़ा ४९८

प्रीत नित बढ़ती गुरु चरनन। हरख मन करता गुरु दरशन
बचन गुरु हिरदे में धरता। प्रेम अंग निज मनन करता
समझ में आई भक्ती रीत। धारलई मन में दृढ़ परतीत ॥३॥
उमंग अब उठती मन माहीं। सरन गह बैठूं गुरु छांहीं॥४॥
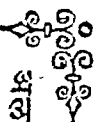
अलख और अगम को परसा जाय।
परेतिस राधास्वामी दरशन पाय ॥
भाग मेरा उदय हुआ भारी। चरन राधास्वामी सिर धारी
उमंग कर आरत साज सजाय।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥ १८ ॥
दया मोपे राधास्वामी कीन अपार।
दिया मोहिं चरन सरन आधार ॥ १९ ॥
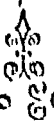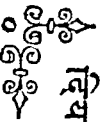
होत अब गुरमुखता का राज । गुरू ने बखशा सगला साज १०
सुरत मन निरमल होय आय । चरन गुरु गुन गावत धाय ॥११
सुनत चढ़ नभ में घंटा सार । ऊँग सुन पहुंची गगन मंझार
बजत जहां सुन में सांरग सार ।
मानसर न्हाई मैल उतार ॥ १३ ॥
महासुन गई पार गुरु नाल । थकत रहा रसते में महा काल
भंवर में मुरली धुन चीन्हा । सतपुर दरश पुरुष लीन्हा १५

सुरत मन हुए चरन आधीन। ध्यान गुरु हुए रूप रस लीन ४
शब्द धुन सुनत हरखता मन। अमी रस चाखत फूला तन ५
चरन गुरु डारूं तन मन वार। कुटंब सब अपना लेऊं तार ६
दया गुरु महिमां बरनी न जाय।
शुकर कर हरदम उन गुन गाय ॥७॥
नगर में धूम पड़ी भारी। निकारें काम क्रोध झारी ॥८॥
तिरशना लोभ विडारें जाय। मोह मद मान नहीं ठहरायं ॥९

सुरत हुई मसतानी सरशार ॥ २० ॥
दया राधास्वामी पाई सार ।
मिला अब प्रेम भक्ति भंडार ॥ २१ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ७४ (शब्द ९२) सफा ४९५

चढ़त मेरा दिन २ गुरु अनुराग । सरन गह रहे सुरत मन जाग
हुई दृढ़ मन में गुरु परतीत । मेहर की परखी अचरज रीत
सेव गुरु करता सहित उमंग । चढ़त नित नया प्रेम का रंग ३
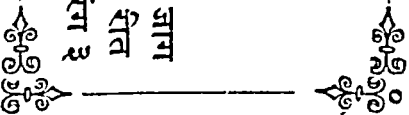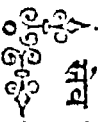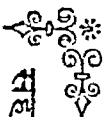
सहसदल जोत रूप निरखूं ।
गगन गुरु आरत लख हरखूं ॥ १७॥
सुन्न धुन सुन कर चढ़ी आगे ।
गुफ़ा पर जहां सोहंग जागे ॥ १८ ॥
पुरुष का दरस किया सत लोक ।
अलख और अगम का पाया जोग ॥ १९ ॥
चरन राधास्वामी निरख निहार ।
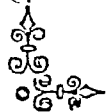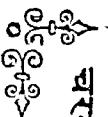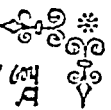
हुए मन इंद्री निपट बेहाल ॥ १२ ॥
मेहर से राधास्वामी बख़शिश कीन ।
नहीं मैं कोई यह सेवा कीन ॥ १३ ॥
करूं मैं आरत सहित उमंग ।
रहूं नित घट में सतगुर संग ॥ १४ ॥
प्रेम की थाली कर धारूं । बिरह की जोत हिये वारूं ॥१५॥
सुरत मन चरनन पर वारूं । काल के बिघन सभी टारूं ॥१६॥
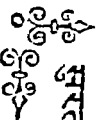
मेरे घट लागा गुरु का रंग । सिखाया गुरु ने भक्ति ढंग ॥८॥

संग जग अब मांहि नहि भावें ।
मान मद अब नहीं भरमावें ॥ ९ ॥

किया मैं तनमन गुरु अरपन । तोड़िया सिर माया सरपन १०

दिया मांहि गुरु ने घट अपना ।
दूत घर पड़ा कठिन तपना ॥ ११ ॥

काल नहीं रोके मेरी चाल ।

सरन राधास्वामी दृढ़ करता। चरन में हित से चित धरता

सुनी जब महिमां राधास्वामी।

हुआ मन जग से निहकामी ॥ ३ ॥

नाम राधास्वामी हिये धारा। करम और भरम सभी टारा

जगत का परमारथ थोथा। काल ने दिया सब को नोता ॥५॥

मिलें जिस सतगुर परम उदार। वही जिव जावे निज घरबार

संत बिन बचे नहीं कोई। करे चाहे जतन अनेक सोई ॥७॥

सहसदल घंटा बाजे सार । गगन में गुरु मूरत उजियार १८
सुन्न में हंसन संग गाती । गुफा धुन मुरली संग राती॥१९॥
पुरुष सत तख़्त विराज रहे । अलख और अगम्म राज रहे २०
परे तिस धाम अनूप अनाम ।
परम गुरु राधास्वामी का बिसराम ॥ २१ ॥

प्रे० बा० १ नं श ३२ (शब्द ९१) सफा ३९०

हुआ मन मगन देख सतसंग । उठत नित हिये में नई उमंग १

होय निस्तारा तुमरा हाल। दया गुरु काटे माया जाल॥११॥
अभागी जीव न मानें कोय। मुफ्त नर देही देते खोय॥१२॥
प्रेम मेरे घट में अब बाढ़ा। चरन गुरु मन सूरत साधा॥१३
करूं गुरु आरत चित्त सम्हाल। हुए अब मुझ पर गुरू दयाल
फंद से मन के काढ़ं हाल। सरन दे मुझको करें निहाल १५॥
भाग बड़ मेरा अब जागा। भरम और संशय सब भागा १६
सरन राधास्वामी हिये धारी। चरन सतगुरु हुइ आधारी१७

करूं अब सतसंग दिन राती। उमंग अब नई २ हिये लाती ५
सेव गुरु करती सहित उमंग। पिरेमी जन संग लागा रंग ६
करे जो गुरु से मेरे प्रीत। सुनाऊं उसको भक्ती रीत ॥ ७॥
गुरू की महिमां नित सुनाय।
प्रीत उन हिरदे देती बढ़ाय ॥ ८ ॥
कहूं मैं सब जीवों से येह। सुफल करो अपनी अब नर देह ९
सरन में सतगुरु के आवो। चरन में भाव भक्ति लावो ॥१०

दिया मोहिं किरपा कर निज संग ॥ १ ॥
दिखा छवि मन मेरा हर लीन ।
प्रीत मेरे हिये में धर दीन ॥ २ ॥
विरह नित दर्शन की उठती ।
वचन सुन भाव भक्ति बढ़ती ॥ ३ ॥
भरे थे मन में बहुत विकार ।
दया कर लीना मोहिं सम्हार ॥ ४ ॥

नाव मेरी बहत रही मंझधार। दिया राधास्वामी पार उतार

सरन दे मुझ को लिया अपनाय। मेहर कर चरनन लिया लगाय

उमंग और प्रेम रहा भरपूर। दास अब कीनी आरत पूर॥२०

जिऊं मैं चरन अमीं रस खाय।

रहूं नित राधास्वामी महिमां गाय॥ २१ ॥

प्रे. बा. १ नं० श० १७ (शब्द ९०) सफ़ा ३५०

चरन गुरु दिन २ बढ़त उमंग।

महासुन अंधियारा देखा। गुफ़ा चढ़ सेत नूर पेखा ॥११॥
सत्तपुर बाजी धुन बीना। अजायब पुरुष दरश लीन ॥१२
दई दुरबीन पुरुष भारी। अलख लख आगे पग धारी ॥ १३ ॥
वहां से गई अगम दरबार। भूप कुल निरखा सुरत सम्हार॥
चरन राधास्वामी फिर परसे। सुरत मन पाय दरश हरखे
कहूं क्या शोभा पिया प्यारे गाय। सुरत मेरी कहत रही शरमाय
करी मोपै राधास्वामी दया अपार। गाऊं गुन उनका बारंबार

विरह हिये माहिं उठातारी। प्रीत नित नई जगातारी ॥ ४ ॥
दीनता चित में लातारी। गुरू की सेवक कातारी ॥ ५ ॥
शब्द से सुरत लगातारी। प्रेम संग धुन रस पातारी ॥ ६ ॥
रूप गुरु ध्यान धरातारी। सुरत मन गगन चढ़ातारी ॥ ७ ॥
निरंजन जोत धियातारी। संख धुन घंटा बजातारी ॥ ८ ॥
तिरकुटी गढ़ पर धावा कीन। गरज सुन गुरु मूरत लख लीन
परे चढ़ तिरवेनी न्हाई। चंद्रकी जोत जहां छाई ॥ १० ॥

सुन में जाय सुनी सारंगी। हंसन साथ मिलाप चही ॥१९॥
भंवर गुफ़ा मुरली धुन सुनकर। सतपुर बीन बजाय रही २
अलख अगम के पार गई अब। राधास्वामी रूप निहार रही

प्रे० वा० १ नं० श० १३ [शब्द ८९] सफ़ा ३३५

उमंग मेरे हियें उठती भारी। करूं गुरु आरत सम्हारी ॥ १ ॥
सजाकर थाली कर धारी। बनाकर जोत जगी न्यारी ॥ २ ॥
उमंग कर आरत गातारी। निरख छवि हुआ मन मातारी ३

कलजुग समा बड़ा बिकराला। करम धरम कुछ नाहिं बनी १
पिछले जुग की करनी त्यागो। सुरु चरनन में चित दई ॥१४॥
काल जाल से सहज निकारें। मन और सूरत गगन चढ़ी १५
राधास्वामी महिमां कही न जाई।
मोहिं निज गोद बिठाय लई ॥१६॥
नित गुन गाय रहूं गुरु अपने। राधास्वामी ध्याय रही ॥१७॥
घंटा संख सुनी धुन दोई। गुरु चरनन छवि झांक रही ॥१८॥

विरह अनुराग वढ़ा घट अंतर । राधास्वामी सरन पई ॥ ६ ॥
सुमरन ध्यान भजन में लागी । अंतर रस मन चाख चखी ॥७
भक्ति भाव की महिमां जानी । सत गुरु चरनन लिपट रही ८
विन सतगुरु कोइ भेद नपावे । शब्द विना सव जीव वही ।९
मैं अब खोल सुनाऊं सव को । विना संत कोइ नाहिं वची।१०
तासे सरन गहो राधास्वामी । जैसे वने तैसे चरन पई ॥११॥
जीव दया उन हिरदे वसती । जम से तुरत वचाय लई ॥१२॥

प्रे० वा० १ नं श० ४९ (शब्द ८८) सफ़ा २७४

सरन गुरु हिये में ठान रही ॥ टेक ॥

उमंग प्रेम की धारा भारी । सो अब चरन वही ॥ १ ॥

बाल पनेसे जग संग बहती । मन मूरख अन जान रही ॥ २

गुरु दयाल मोहिं भेटे आई । चरन भेद उन सार दई ॥ ३ ॥

कर सतसंग बूझ तब आई । जगकी रीत बिसार दई ॥ ४ ॥

सुरत शब्द मारग अब धारा । संत मते की टेक गही ॥ ५ ॥

यह पद सार सार का सारा । आदि अनंत अखंड अपारा ॥ १६
जोगी ज्ञानी भेद न जाना । तीन लोक में रहे भुलाना ॥ १७ ॥
देवी देवा और औतारा । संत बिना कोई जाय न पारा ॥ १८॥
भाग जगा अब धुर का मेरा । सतगुर का मैं हुआ निज चेरा १९
चरन सरन में लिया लगाई । करम भरम सब दूर हटाई ॥ २०

महिमां राधास्वामी अतिकर भारी ।
सुरत हुई चरनन बलिहारी ॥ २१

धार त्रिवेनी किये अश्नाना। ररंकार धुन सुरत समाना ॥ ९ ॥
महासुन्न होय ऊपर धाई। भंवर गुफ़ा मुरली सुन पाई ॥ १० ॥
सेतसूर परकाश दिखाई। हंस मंडली अधिक सुहाई ॥ ११ ॥
सत्तलोक का द्वारा खोला। सत्तपुरुष तब बानी बोला ॥ १२ ॥
दरशन कर सत हुई मगनानी। प्रेम सिंधु में आन समानी ॥ १३
अलख अगम को निरखत धाई। राधास्वामी चरन समाई १४
यहां आय कर आरत गाई। मेहर दया में निजकर पाई ॥ १५ ॥

उमगत हिया धुन शोर मचावत।
सुरत निरत संग नभ पर धावत ॥ ३ ॥
सहस कंवल धुन घंट सुनाई। जोत रूप का दर्शन पाई ॥ ४ ॥
सतश्याम के मध्य ठिकाना। तिल अंतर नल चंक दिखाना ॥ ५ ॥
संत सुना और धुन ओंकारा। त्रिकुटी चढ़ गुरु रूप निहारा
सूरज मंडल लाल दिखाई। गरज २ मिरदंग बजाई ॥ ७ ॥
आगे चढ़ खोला दस द्वारा। चंद्र चांदनी चौक निहारा ॥ ८ ॥

अपनी दया से दिया मोहि दाना ॥ १८ ॥
जगे भाग गुरु मूरत चीन्ही । राधास्वामी चरन सुरत हुई लीनी
पाई सरन मेहर हुई भारी । राधास्वामी पै मैं जाऊं बलिहारी २०
हुई आरती अब संपूरन । सुरत समाई राधास्वामी चरनन २१

प्रे० बा० १ नं श० ३८ (शब्द ८७) सफ़ा २४९

आरत गावे दास रंगीला । चरन सरस में खेलत लीला ॥ १ ॥
वचन गुरू हित चित से सुनता । धुन धुन २ मन को धुनता

चरन सरन में निस दिन धाऊं ॥ १२
ज्ञान मते में दिवस गवांए। सुख न पाया रीते आए ॥ १३ ॥
महिमां राधास्वामी सुनी बनाई। खोजत २ सन्मुख आई ॥१४
राधास्वामी मेहर दृष्ट से देखा। सुरत शब्द का दीना लेखा १५
सतसंग में मोहि लीन लगाई। करम धरम सब दूर नसाई १६
दिन २ प्रीत प्रतीत बढ़ाई। न्याराकर मोहि लिया अपनाई ॥१७
मैं अजान उन गत नहिं जाना।

वहां से चल पहुंची संतपुर में। सतगूरु दरशन पाये अधर में
अमी अहार विलास नवीना। मलय सुगंध मधुर धून बीना ८
देखा अचरज कहा न जाई। शोभा सतगुरू क्योंकर गाई
अलख पुरुष तिस आगे देखा। अगम पुरुष तिस ऊपर पेखा
राधास्वामी धाम अजब दरसाना।
अकह अपार अनाम बखाना ॥ १ ॥
राधास्वमी महिमा कस गह गाऊं।

प्रे० १ नं० श १९ (शब्द ८६) सफ़ा २०८

विरह अनुराग दास घट आया । सतगुरु सन्मुख आरत लाया

चुन २ कलियन हार बनाया । शब्द गुरू के गल पहिनाया ॥२॥

सहस कंवल का थाल बनाया । वंकनाल धुन जोत जगाया ३

उमग २ कर आरत गाया । घंटा शंख मिरदंग बजाया ॥ ४ ॥

सुरत उर्गा लागी दसद्वारे । तीन लोक के होगई पारे ॥ ५ ।

चढ़ी महा सुन खिड़की खोली । सोहंग मुरली धुन जहां बोली

जनम मरन से कोई न वाचे । सतगुरु विन चौरासी नाचे १५
मेरा भाग ज़गा क्या कहना । सतगुरु मिले भेद मोहिं दीना
सुरत शब्द की राह बताई । मारग घर का दीन लखाई ॥१७॥
नित सतसंग करूं चरनन में । गुन गाऊं और रहूं मगन में १८
आरत करूं और प्रेम बढाऊं मन और सुरत गगन चढ़वाऊं १९.
सुन्न में जाय ररंग धुन पाऊं । भंवर गुफ़ा मुरली बजवाऊं॥२०॥
सतपुरुष का दरशन करके राधास्वामी के चरन समाऊं २१

माया वस निज घर नहिं चीना।
सुःख दुःख में रहे अधीना ॥ १० ॥
काल मते को चित से धारा। करम धरम और भरम सम्हारा
कोई तीरथ कोई वरत दिवाना।
कोई मूरत कोई तप अभिमाना ॥
कोई जप कोई ध्यान लगावे। कोई वाचक ज्ञान सुनावे १३
यह सब मूल भरम में भटके। काल करम के जाल मे अटके १४

जगत आस विस्वास बंधाया । मन तरंग संग अति भरमाया
कैसे छूटे जतन जतन न कोई । बिन सतसंग उपाव न होई
सतगुरु मिलें तो भेद बतावें । दया मेहर से जाल कटावें ६
मारग घर का देहें लखाई । सुरत इधर से उधर लगाई ॥ ७॥
पर यह बात कठिन अति भारी ।
जीव बिसर गया घर सुध सारी ॥ ८ ॥
सतगुरु की परतीत न लावे । चरनन में प्रीत नहिं आवे ।९ ॥

मेरा वस मन से नहीं चाले । बहुत लगाये इन जंजाले ॥१९॥
पर तुम समरथ पुर्ष अपारा । काटोगे हम निश्चय धारा ॥२०॥
अब आरत सब विधि हुई पूरी । राधास्वामी रहूं हजूरी ।२१।

प्रे० बा० १ नं० श० १ (शब्द ८५) सफ़ा ६८

बुंद सिंध तज पिंड में आया । पांच तत्त गुन तीन बंधाया ।१
जोत निरजंन जाल बिछाया । भोगन माहिं अधिक लिपटाया २
पांच दूत संग लाग बढ़ाया । दस इंद्री रस रसन रसाया ३
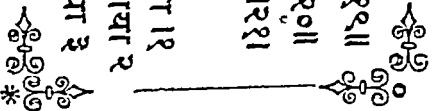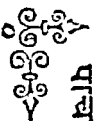
पीपी चहुं दिस होत पुकारा । सुन २ राधा मगन विहारा १२
स्वामी २ धुन अब जागी । उमंग हिये में छिन २ लागी १३
जक्त वासना सब हम त्यागी मन हुआ मेरा सहज वैरागी ॥१४
कृपा करो अस राधास्वामी । करत रहूं तुम चरन नमामी १५
मन को फेरो दीन दयाला । छिन २ निरखूं दर्श विशाला ।१६
अबतो लिये जात मोहिं खींचे । मानत नहिं डार मोहिं भींचे
भक्ति पौद जो तुमही लगाई । मेहर दया से सींचो आई ॥१८॥

धीरज थाल प्रेम की जोती । धुन विवेक घट मोती पोती ॥५॥
विरह राग तज रंग लगाऊं । सुरत निरत ले शब्द समाऊं ॥६
रास मंडल घट लीला ठानी । काली नाथ निरख नभ जानी ७।
घोर उठा अब गगन कुंज में । मगन हुई लख तेज पुंज में ॥८॥
मद और मोह हने और सोधे । मोहन मुरली बजी मन बोधे ९
गोपी धुन और शब्द ग्वाल मिल । सुरत गूजरी आई चल १०
खेलत कूदत शोर मचावत । दधि सब अकाश मथि २ लावत

महिमां सतगुर कहां लाग कहूं। आरत कर अब चुप हो रहूं
देवो प्रसाद रहूं चरनन में। गुन गाऊं पल २ छिन में ॥ २१ ॥

सा० नं० श० ५ (शब्द ८४) सफा ७०८

आरत गाऊं स्वामी सुरत चढ़ाऊं। गगन मंडल में धूम मचाऊं
श्याम सुंदर पद निरख निहारूं। सेत पदम पर तन मन वारूं
विंद्रावन मथुरा पद लीन्हा। गोकुल जीत कलिंद्री छीना ॥३॥
सुन्न महावन गिरवर चीन्हा। महा सुन्न जा अमृत पीना ॥४॥

त्रिकुटी घाट किया जाय फेरा। ऊँकार धुन से मन घेरा॥१३॥
मन हुआ लीन सुरत अब चीन्ही। कान पडी धुन झीनी झीनी
मान सरोवर पैठ अन्हाई। निर्मल होय निर्मल पद पाई १५॥
सुन्न शिखर जाय फेरा दीन्हा। कोटमहासुन्न चढ़कर लीन्हा
भँवर गुफा सोहंग धुन सुनी। सत्त नाम धुन छिन२ गुनी
सत्तलोक जाय बैठक पाई। सत्त सुरत सत शब्द समाई १८
अलख अगम के पार अनामी। यह भी पद दरसे मोहि स्वामी

नओं द्वार पर नित्त विठाऊं। चित्त जोड़मुख आरत गाऊं॥६॥
मैं अति दीन अधम तुम दासा। आरत देखन उपजी आसा ७
दूर देश से आयो अबही। आरत करूं रिझाऊं गुरही ॥ ८ ॥
मोपर कृपा दिष्ट अब कीजै दीन बंधु मोहिं सरना लीजै ॥ ९ ॥
भेद तुम्हारा अति कर सारा। सुरत शब्द मारग में धारा॥१०॥
पकडू शब्द चढ़ाऊं सूरत । नभ निरखूं और देखूं मूरत ॥११॥
सहस कंवल धस घंट बजाऊं। बंक नाल चढ़ संख सुनाऊं१२

सुरत शब्द संग आई जाग । राधास्वामी मिले वहां भेर भाग २१

सा० नं० श० ५ [शब्द ८३] सफ़ा ६६८

सतगुर संत मिले राधास्वामी । आरत करने की विधि ठानी ॥ १ ॥
अधर थाल और अक्षर जोती । प्रेम सुरत से दृष्ट परोती ॥ २ ॥
निरत नाम धुन माला डारूं । सीतल तिलक केसरी धारूं ॥ ३ ॥
वस्तर भाव प्रीत पहनाऊं । अमी सूर में भोग धराऊं ॥ ४ ॥
तन मन निजमन भेंट चढ़ाऊं । नौविधि नौछावर करवाऊं ॥ ५ ॥

सत्त नाम धुन वीन सुनाई ॥ १४ ॥
अलख अगम का नाका लिया । जहां अमीरस अद्भुत पिया।१५।
आगे को फिर सुरत धाई । राधास्वामी धाम समाई ।१६।
अभेद आरती करी वनाई । भेद तासु कोई संत जनाई ॥ १७॥
नहीं वहां थाल न दीपक वाती । सदा आरती वहु विधि गाती
चरण सेव चरणा मृत पीती । उमंग सहित परशादी लेती १९
छिन २ राधास्वामी रूप निहारू । पल २ राधास्वामी हिरदे धारू

जन्म २ की फाटी पीड़ । छान करी जहां नीर और क्षीर ॥ ९॥
आतम अक्षर निरख निहारी । महासुख की करी तयारी १०
पंथ घोर जहां अति कर भारी । सतगुरु बल से पार सिधारी
भंवर गुफा पहुंची एक छिन में ।
बंसी की धुन पड़ी श्रवण में ॥ १२ ॥
सोहंग २ सुनी पुकार । हंसन रूप देख उजियार ॥ १३ ॥
सत्तलोक चढ़ी अमर पद आई ।

ममता छोडूं मैं अब सबकी । प्रीत करूं राधास्वामी चरणनकी
सुमरण नाम नेम से करूं । प्रेम सहित अनहद धुन सुनूं ३
सुन २ धुन फिर आगे चढूं । सहस कंवल दल बानी पढूं ४
शाम सेत तक आगे चलूं । बंकनाल के भीतर धसूं ॥ ५ ॥
वहां से त्रिकुटी धाम सम्हारूं । ओंग २ संग बहुत पुकारूं ६
ररंकार धुन सरवर तीर । हंसन की जहां देखी भीड़ ॥ ७
सेत २ पद जहां गंभीर । सुरत निरत धस धारी धीर ॥ ८

अलख अगम से भेंटा करके । राधास्वामी चरन पई ॥१६॥
अचरज रूप निरख हिये दिरगन । छिन२रीझ रही ॥१७॥
अद्भुत सोभा रूप अनूपा । निरखत मगन भई ॥१८॥
महिमां राधास्वामी बरनी न जाई । हिया जिया वार रही ॥
ऐसी होली खेल राधास्वामी से । अचल सुहाग लई ॥

सा० व० नं श० १५ (शब्द ८२) सफा १२८

आरत करूं आज सतगुर की । तन मन भेंट चढ़ाऊं अबकी १

नैनन की पिचकार छुडावत। तिलमें उलट गई ॥९॥
सहस कंवल चढ़ जोत जगाई। संख बजाय रही ॥१०॥
लाल गुलाल रूप गुरु देखा। त्रिकुटी जाय रही ॥११॥
चन्द्र रूपलख निरखी गुफ़ा। जहां मुरली बाज रही॥१२॥
सत्तलोक जाय पुरुष रूप लख। अचरज कौन कही ॥१३॥
हंसन से मिल खेली होली। बीन बजाय रही ॥१४॥
प्रेम रंग की बरषा कीन्ही। अमृत धार वही ॥१५॥

दया धार आप सतगुरु प्यारे । प्रेम का रंग वही ॥२॥
भक्तिदान फगुआ दिया सबको । प्रीत जगाय दई ॥३॥
बिरह गुलाल अबीर तड़प का । मन पर डाल दई ॥४॥
उमंग रंग भर २ अब घटमें । गुरु पर छिड़क दई ॥५॥
आओ सखी अब सोच न कीजे । चरनन लिपट रही ॥६॥
दया दृष्ट अब सतगुर डारी । अंतर भीज रही ॥७॥
दरशन करत फिरत मत वारी । सुध बुध बिसर गई ॥८॥

अमर पुर पहुंची कर सिंगार। पुरुष का देखा नूर अपार॥
गई फिर अलख अगम के पार। रही राधास्वामी चरन निहार॥
मेहर गुरु जागा भाग अपार। सरन राधास्वामी पाई सार १९
आरती राधास्वामी सन्मुख धार ।
रहूं नित राधा स्वामी चरन सम्हार २०॥

प्रे०वा० ३ नं श ७ (शब्द ८१) सफ़ा ४५८

होली के दिन आप सखी उठ खेलो फाग नई ॥ १ ॥

हुआ राधास्वामी चरनन विस्वास ।
करें वे पूरन एक दिन आस ११ ॥
चरन बिन और न कुछ चाहूं । नाम राधास्वामी नित ध्याऊं
चढ़ूं अब घट में नभधुन हेर । काल और करम हुए दोउ ज़ेर
गगन चढ़ गुरु का देख समाज । करें जहां मन सूरत घट राज
मानसर न्हाऊं मैल उतार । सुनूं धुन किंगरी सारंग सार
महासुन घाटी चढ़ भागी । गुफ़ा में मुरली धुन जागी १६ ॥

देख सतसंग की अजब बहार। दिया मैं तन मन गुरु परवार
सुरत और शब्द जुगत धारी। कटे सब करम भरम भारी
लगा अब घटमें रस लेने। सरन गुरु हित चित से गहने ७॥
कहूं क्या महिमां राधास्वामी नाम।
करत मन सुमिरन हुआ निष्काम ८॥
जगत की आसा दीनी त्याग। बढ़त गुरु सत संग में अनुराग
सार रस सतसंग पिऊं दिन रात। मेहर गुरु महिमां कही न जात

निरखिया आगे फिर निज धाम। पाइया राधास्वामी पद बिसराम
आरती राधास्वामी कीनी आय। उमंग और प्रेम रहा छियेछाय

प्रे० बा० १ नं० श० ७७ (शब्द ८०)   सफ़ा ५०६

जगत का मैला देखा रंग। हुआ मन काल करम से तंग। १
बहुत दिन भरमा भरम अनेक। देव किरतम की धारी टेक २
नहीं कुछ परमारथ पाया। करम फल हाथ नहीं आया ॥ ३ ॥
सुनी जब राधास्वामी मत महिमा। गहे मन चित से गुरुचरना

प्रेम गुरु हिरदे छाय रहा । रूप गुरु मन में भाय रहा ॥ १२ ॥
चरन गुरु दम २ हिरदे धार । सरन पर तन मन डारूं वार १३
सुरत मन चढ़ते नभ की ओर । सुनत अब घट में धुन घन घोर।
छोंट धुन घंटा सुनती धाय । जोत का रूप निहारूं आय । १५
घाट फिर त्रिकुटी पाऊं जाय । सूर जहां लाल २ दिखलाय १६
सुन्न चढ़ मान सरोवर न्हाय । गुफ़ा में मुरली रही बजाय १७
गई सतपुर में पाया वास । अलख लख अगाम लखा परकाश

शब्द की डोरी नित लौलाय। अर्मीरस पीवत रहूं अघाय ॥६॥
नाम राधास्वामी गाऊं नित्त। चरन में जोडूं हित कर चित्त॥
वचन गुरु कस कहुं महिमा गाय।
भरम सब दीनि दूर बहाय ॥ ८ ॥
दूत शरमा कर ऐंठ रहे। विकारी थक कर बैठ रहे ॥ ९।
भोग इंद्रिन के होगए ख्वार। मान मद काढ़े सबही झाड़ १०
हुआ मन जग से सहज उदास। चरन गुरु दृढ़ कर बांधी आस
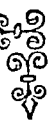
धार रहूं राधास्वामी बल निज चित्त ॥१९॥

प्रे० बा० १ नं श ११ (शब्द ७९) सफा ३३२

दीन हुइ सतगुरु हुए दयाल ।१
चरन गुरु परसे हुई निहाल।
मिला मोहि सत संग का रस सार
छोड़ घर आई गुरु दरबार।
रही तन मन से चरनन साथ
प्रीत गुरु चरन बढ़त दिन रात।
प्रेम संग सूरत जाग रही ॥ ४ ॥
मोह जग मान से त्याग दई।
सुरत मन घेरत लख उजियार
दरश गुरु करती नैन निहार।
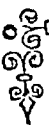
सहसदल छखे जात उजियार। संख औौर घंटा संग पियार १३

गगन चढ़ सुनें गरज मिरदंग। सुन्न में बाजे धुन सारंग ॥ १४॥

भंवर चढ़ पहुंची सतपुर धाय। पुरुप का दरशन अद्भुत पाय

परे चढ़ निरखा राधास्वामी धाम। वहीं हैं अकह अपार अनाम १६

मेहर बिन कस पावे यह दास। दया बिन मिले नहीं निज नाम

दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय। मेहर से लीना मोहि अपनाय

चरन में राधास्वामी खेलूं नित्त।

जगत जीव स्वारथ के वंदे । फंसे सब काल करम फंदे ॥ ६ ॥
सुधि परमारथ की नहीं लाय। संत का वचन न चित ठहराय॥
करें गुरु निंद्या दिन और रात। पिरेमी जन से करें उतपात ॥८॥
संग उन चित से नहीं चाहूं। वचन उन नेक न मन लाऊं ॥९॥
करूं गुरु भक्ती उमंग २ । प्रेम का धारूं हिरदे रंग ॥ १० ॥
करें प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय । काल के विघन से लेहिं बचाय
प्रीत चरनन की नित्त बढ़ाय । सुरत मन देवें अधर चढ़ाय॥१२॥

भूल चूक मेरी चित नाहिं धारी। राधास्वामी दाता दया करात

प्रे० वा० ४ नं० श० ७६ [शब्द ७८]

पिरेमन लाई आरती साज। दिया गुरु भक्ति भाव का दाज १

प्रीत हिये अंतर जाग रही। सुरत घट धुन संग लाग रही ॥२

काल ने दीना वहु झकझोर। मेहर हुई घट गया उसका ज़ोर३

दया से करती नित सतसंग। वचन सुन वाढ़त चित्त उमंग॥३॥

जगत का देखा झूंटा खेल। करूं अब प्रेमी जन से मेल॥ ५ ॥

सुरली धुन और बीन बजावत । अलख अगम के चरन परात
राधास्वामी धाम धाय धुन सुन २ ।
अचरज रूप निरखत मुसक्यात ॥ १६ ॥
अभेद आरती राधास्वामी कीनी ।
मेहर पाय निज भाग सरात ॥ १७ ॥
राधास्वामी महिमां अति से भारी ।
कोवरने को करें विख्यात ॥ १८ ॥

अनेक भांति की खटक हिये में। सालत रहै दिन रात ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरनन करत पुकारा। मेरा बल कुछ पेश न जात
अरज़ी करत बहुत दिन बीते। अब तो धरो मेहर का हाथ १०
कारज मेरे आप संवारो। दीन दयाल दया के साथ ॥ ११ ॥
तब मन निश्चल सुरत होवे निरमल। धुन रस और रूप रस पात
हरख २ फिर चढ़ूं अधर में। होय करम की बाज़ी मात ॥ १३॥
निरख जोत लख सूर प्रकाशा। चंद्र चांदनी चौक समात १४

सुरतिया मांग रही सतगुरु से मेहर की दात ॥ १ ॥
दीन होय आई राधास्वामी चरना। चित से सुनती गुरु मुख बात॥
राधास्वामी महिमां अगम अपारा। समझ २ हरखात ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत जगावन मन में। चरन सरन पर हिया उमंगात ४
सुरत शब्द मारग की महिमां। सुन २ हियरे उमंग बढ़ात ॥५॥
नित अभ्यास नेम से करती। मगन होत घट में धुन पात ॥ ६
माया काल पेंच बहु डाले। चिंता वैरन विघन लगात ॥ ७ ॥

त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत। राधास्वामी दया हुई निर्मल सूरत
राधास्वामी दीना घाट चढ़ाय। सुन में जाय मानसर न्हाय
राधास्वामी महा सुन्न दिखलाय। मुरली धुन दई गुफ़ा सुनाय
राधास्वामी मेहर सुनी धुन बीन। भेद अलख और अगम का चीन
पूरन मेहर करी राधास्वामी। जाय लखा धुर धाम अनामी १८
राधास्वामी गुन कस करूं बखान। राधास्वामी चरन अब मिला ठिकान

ग्रं० बा० २ नं० श० ३८ (शब्द ७७) सफ़ा २४५

राधास्वामी सेवा करत रहूंरी।राधास्वामी मुखड़ा ताक रहूंरी

राधास्वामी शोभा निरख हरखती ।
राधास्वामी दया घट माहिं परखती ॥ ११ ॥
राधास्वामी छवि पर तन मन वारूं ।
राधास्वामी चरन हिये में धारूं ॥ १२ ॥
राधास्वामी दया सुर्त घट में चढ़ती ।
जोत रूप लख आगे बढ़ती ॥ १३ ॥

निस दिन घट में देख विलास । राधास्वामी चरन हुई निज दास

राधास्वामी काट दिये सब भरम । गुरु भक्ती अब हुई निज धरम

राधास्वामी चरन आसरा लीन । पिछली टेक सबही तजदीन ९

राधास्वामी सरन भरोसा भारी ।

राधास्वामी बिन नहीं और अधारी ॥ ८ ॥

राधास्वामी लिया अब मोहिं अपनाई ।

अटक भटक सब दीन छुड़ाई ॥ ९ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ६ (शब्द ७६) सफ़ा १२३

राधास्वामी दरश दिया मोहिं जबसे।
राधास्वामी पर मोहित हुई तबसे ॥ १ ॥
राधास्वामी भक्ति भाव मोहिं दीना।
राधास्वामी चरन सरन में लीना ॥२ ॥
राधास्वामी घट का भेद जनाई। धुन संग सूरत दीन लगाई ॥३
राधास्वामी सूरत घट में चीन। पियत अमीरस मन हुआ लीन

सतगुरु महिमां कही नजाई। कहत २ मैं कहत लजाई॥ १३ ॥
राधास्वामी द्या भाग मेरा जागा। तव सत गुरु के चरननलागा
चरन अधार जिऊं मैं निस दिन। राधास्वामी २ गाऊं छिन २॥१५
सव जीवों को कहूं पुकारी। सतगुरु खोजो होव सुखारी ॥ १६ ॥
तन मन धन चरनन पर वारो। घट में गुरु का रूप निहारो ॥१७
राधास्वामी चरन सरन गहो भाई।प्रेम सहित करो आरत आई
राधास्वामी दया करें जव तुम पर। करम काट पंहुचावें निजघर

अमीं धार लागी अब झिरने । सुरत निरत घट अतरं घिरने ६
धुन झनकार सुनत सरसाई । उमंग २ मन गगन समाई ॥ ७ ॥
सुरत छड़ी अब चढ़त अगाड़ी । सुन में जाय लखी फुलवारी ॥ ८
ऋितु बसंत चहुं दिस रही छाई । हंसन संग विलास सुहाई ॥ ९ ॥
महासुन्न घाटी चढ़ आई । भंवर गुफ़ा सोहंग धुन पाई ॥ १० ॥
सतगुरु रूप लखा सतपुर में । धुन वीना जहां पड़ी स्रवन में ११
कोटिन चंद्र सूर उजियारा । सतगुरु के इक रोम पसारा ॥ १२ ॥

सतगुरु मिले परम सुख देवा ॥ १ ॥
परस चरन हिया कंवल खिलाना
दीन होय मन सरन समाना ॥ २ ॥
प्रेम भाव हिये माँहि वसाई । संशय भरम अव दूर पराई ३
दरशन करत जगत सुध भूली ।
तज दई डार गही दृढ़ मूली ॥ ४ ॥
कृपा दृष्ठि सतगुरु जव कीनी । गाजा गगन सुरत हुई लीनी ५

भाग मेरा भी दिया जगाय ॥ १७ ॥
कराया सुरत शब्द अभ्यास ।
दिखाया घट में अजब बिलास ॥ १८ ॥
भजूं नित राधास्वामी नाम अपार ।
मिला मोहिं चरन अमी आधार ॥ १९ ॥

प्रे० बा २ नं० श० ४८ (शब्द ७५) सफ़ा ९८

आज सजन घर बजत बधावा ।
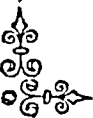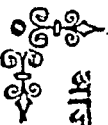
कहूं क्या महिमां हैरत धाम ।
गाऊं मैं फिर २ राधास्वामी नाम ॥ १३ ॥
संत गत ऊंचे से ऊंची । सुरत नहीं कोई वहां पहुंची ॥१४॥
गही जिन संत चरन की ओट । वही जन डार करम की पोट
मेहर से पहुंचे राधास्वामी धाम ।
किया आय चरनन में विस्राम ॥ १६ ॥
लिया मोहि सतगुरु चरन लगाय ।

धाय कर गई सतगुरु दरबार ।
किया धुन बीना संग पियार ॥ ९ ॥
हुए परसन सतपुरुष दयाल । भेद दे अधर चढ़ाया हाल ।१०।
अलखपुर दरश पुरुष कीन्हा ।
अधर चढ़ भेद अगम लीन्हा ॥ ११ ॥
अनामी धाम निशाना देख ।
रही मैं राधास्वामी दरशन पेख ॥ १२ ॥

दरस गुरु पाय मगन होता। काल और करम रहा सोता॥५॥

सुन्न में फल मल धोये झाड़।

सुनत रहा सारंगी धुन सार॥ ६ ॥

शिखर चढ़ गया महासुन पार ।

गुरु बल महा काल रहा हार॥ ७ ॥

भवंर चढ़ निरखा अजब विलास

सुरत हुई सतगुरु चरनन दास॥ ८ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ९९ (शब्द ७४)सफ़ा ५६५

प्रीत गुरु धार रहा मन माहिं । कालबल जार रहा तन माहिं॥१॥

पकड़ता गुरु के चरन सम्हार ।

रगड़ता काम क्रोध मन मार ॥ २ ॥

शब्द धुन सुनता सूरत साथ ।

गगन पर चढ़ता गह गुरु हाथ ॥ ३ ॥

संख धुन नभ में बाज रहीं । गगन में मिरदंग गाज रहीं ॥४॥
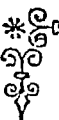
महासुन घाटी चढ़ भागा। भंवर में नूर सूर जागा ॥ १३ ॥
निरख अमरापुर पुर्प विलास। पद्म गुरु पाया चरन निवास
करी मोपे सतगुरु दया नवीन। भेद फिर आगे का मोहिं दीन
चढ़ाई सूरत उलटी धार। अलख लख किया अगम दरबार १६
भेद राधास्वामी पाया सार। हुई मैं उन चरनन बलिहार १७
कहूं क्या महिमा मेहर अपार। सरनदे लीना मोहिं उबार १८
भाग बड़ अपना क्या गाऊं। चरन राधास्वामी नित ध्याऊं १९

सुरत रहे लागी दिन और रैन ।
भजन विन नहीं पावत मन चैन ॥ ९ ॥
सरकती छिन २ नभ की ओर ।
संख धुन घंटा डाला शोर ॥ १० ॥
निरखता झिल मिल जोत अपार ।
बंक धस लखता गगन उजार ॥ ११

सुन्न म देखी हंसन भीड़ । धोये सब कलमल वेनी तीर १२।

राग रंग माया फीके लाग। चाह भोगन की दीनी त्याग ।४।
संग राधास्वामी चित भाया। छोड़ जग चरनन में धाया ।५
वचन गुरू सुनता दिन और रात।
काल संग जूझत मन कर हाथ ॥ ६ ॥
शब्द धुन लागी घट प्यारी। चरन गुरू प्रीत लगी सारी ।७।
दरश गुरू देता तन मन वार।
देखता घट में अजब बहार ॥ ८ ॥

परम गुरु राधास्वामी हुए दयाल ।
सरन देमुझको किया निहाल ॥ १५ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ६२ (शब्द ७३) सफ़ा ४६२

पदम गुरु चरन हुआ मन दास ।
शब्द संग सूरत करत विलास ॥ १ ॥
चरन गुरु प्रीत बढ़ी भारी । छोड़ दई मन कृत संसारी ॥२॥
कुटुंब परिवार संग तज दीन । हुआ मन चरनन में लौलीन३

अकेला बन में रहा ललकार । बिघन सब छिन में टारे झाड़ ॥
क्रोध को राखा बांध गुलाम । धारकर हिरदे राधास्वामी नाम
चहूं दिस धाक पड़ी भारी । हुई गुरु मंदिर उजियारी ॥ १४ ॥
घंट और शंख लागे बजने । काम और लोभ देस तजने ॥१५॥
बंक चढ़ त्रिकुटी पहुची धाय । गुरु का दरशन सन्मुख पाय ॥
जहां अब आरत लीन सजाय । चंद की जोत जगाई आय । १७
बीन और मुरली बाज रही । पुरुष संग आरत साज रही ॥१८

प्रेम की झड़ियां लाग रहीं । सुरत मन भीजत जाग रहीं ॥६॥
वृक्ष और साखा फूल रहे । मोर और दादुर बोल रहे ॥ ७ ॥
हंस सब जुड़ मिल आवें जांय । अमी फल खावें और हरखाय
देख गुरु मंदिर अजब बिलास । काल नित झुरता होत उदास
भिड़ा और सूकर रूप पहिचान ।
करता गुरु मंदिर आवन जान ॥ १० ॥
मेहर राधास्वामी अस कीनी । सूरत निजकर मोहि दीनी ११

कहीं नहीं जाय सुरत हुई लीन ॥ १९ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ५७ (शब्द ७२) सफ़ा ३७३

दया राधास्वामी हुई भारी । प्रेम की सींचूं घट क्यारी ॥ १ ॥

हुई मैं गुरु की पनि हारी । असी जल भरत नहीं हारी ॥ २ ॥

पिलाऊं सुत गउवन सारी । लगी मोहि यह सेवा प्यारी ॥३॥

स्वामी की महिमां कस गाऊं । दई मांहि गुरु मंदर ठाऊं ॥४॥

खिली जहां भक्ती फुलवारी । भूम वह लागे अति प्यारी ॥५॥

शब्द घट सुनता सुरत लगाय । छांट धुन घंटा निरत जगाय ॥
आरती घट में नित करता । गगन चढ़ गुरु मूरत लखता ।१५
सुन्न चढ़ भरवरगुफा धावत ।
लोक सत गाऊं सतगुरु आरत ॥ १६ ॥
अलख और अगम चरन परसे । सुरत मन निज करके हरखे ॥
चरन राधास्वामी निरख निहार । आरती गाऊं उनकी सार
दया जस राधास्वामी मोपै कीन ।

बरत और तीरथ छोड़ दिये । चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लिये ९
पढ़ें सब पंडित वेद पुरान । भेद नहीं पावैं रहें अजान ॥ १०॥
गाऊं कस राधास्वामी मेहर अपार ।
सरन दे किया मोर उपकार ॥ ११ ॥
काल मत भूल रहा संसार ।
लिया मोहि गुरु ने सहज निकार ॥ १२ ॥
प्रीत मेरे हिये में धर दीनी । प्रेम रंग सुरत हुई भीनी ॥ १३ ॥
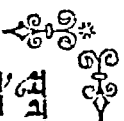
सुनत गुरु वचन हिया उमंगाय ।
प्रेम और प्रीत लगी अधिकाय ॥ ३ ॥
हुई अब मन में दृढ़ परतीत । सुरत में धरी शब्द की प्रीत ॥४॥
भाग मेरा जागा अब भारा । मिला राधास्वामी सतसंग सारा ॥५॥
शब्द का भेद अनूप अपार । दिया मोहि गुरु ने किरपा धार ॥६॥
सुरत मेरी कीनी गुरु ने सार । छुड़ाया करम भरम गुब्बार ॥७॥
देव और हवी नहीं पूजूं । प्रेम रंग गुरु चरनन भींजूं ॥ ८ ॥
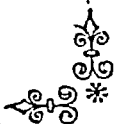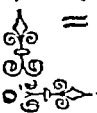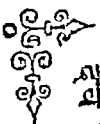
लखा फिर राधास्वामी अचरजधाम । सुरत ने पाया अब विसराम

मेहर राधास्वामी बरनी न जाय ।

सुरत मेरी छिन२ रही गुन गाय ॥ १९ ॥

प्रे० बा० १ नं० श २३ (शब्द ७१) सफा ३६७

चरन गुरु बसे हिये में आय । सरन गुरु गही उमंग मन धाय

स्वामी का दरश लगा प्यारा । हुआ घट अंतर उजियारा ॥२॥

हंस झुंड मिल आनन्द गाते । उमंग और प्रेम प्रीत राते ॥१२॥
शब्द धुन गाज रही घनघोर । शंख और घंटा झालर शोर १३
गगन गढ़ सुनत चढ़ चाली । गरज धुन मिरदंग सकराली १४
सुन्न में सारंग बाज रही । गुफा धुन मुरली बाज रही ॥१५॥
मधुर धुन बीन बजै सतलोक । पुरुष संग पाया सुरत जोग १६
अलख और अगम पुरुष दरबार ।
किया जाय दरशन निरख निहार ॥ २७ ॥

प्रेम की धार लगी वहने । सुरत धुन शब्द लगी गहने ॥ ५ ॥
उमंग अब घट भीतर जागी । हुये मन सुरत अनुरागी ॥ ६ ॥
धावता दरशन को हरबार । प्रीत गूरु बढ़ती हिये में सार ७
सेव गूरू उमंग सहित करता । चरन हिये प्रीत सहित धरत
प्रेम गुरु लागा हिरदे रंग । उठत आरत की नई उचंग ॥ ९ ॥
प्रीत से भाव वस्त्र लाता । मगन होय गुरु को पहिनाता ॥ १०
सुधारस व्यंजन बनवाता । थाल भर गुरु सन्मुख लाता ॥११॥

प्रे० वा० १ नं० श० २१ (शब्द ७०) सफ़ा ३६१

दरस गुरु जब मैं किनारी । रूप रस हुआ मन भीनारी ॥१॥
हुई जब धार वचन जारी । सुरत मन भींज गए सारी ॥२॥
मेहर की दृष्ट करी गुरु ने ।
लगा मन शब्द ध्यान जुड़ने ॥३॥
भेद मोहि गुप्त दिया जबही
हरे मेरे मन बुद्धी तबही ॥ ४ ॥

यह विनती मेरी अब मानों । कीजे मेरी आप सम्हाल ॥१३।
घट में दरश दिखाकर अपना । जलदी मुझको लेव निकाल १४
छिन २ राधास्वामी चरन धियाऊं ।
रहे नहीं कोई और खियाल ॥ १५ ॥
प्रेम सिंधु में पहुंच दया से । पाऊं प्रेम रूप धन माल ॥ १५ ॥
जो मांगा सो बखशिश दीजे ।
राधास्वामी कीजे मेहर कमाल

घंटा संख सुनूं धुन नभ में। देखूं सुंदर जोत जमाल ॥ ६ ॥
त्रिकुटी जाय ओंग धुन पाऊं। चमक रहा जहां सूरज लाल ७
अधर जाय तिरबेनी न्हांऊं। सुनूं सुन्न में शब्द रसाल ॥८॥
महासुन्न होय पहुंच गुफ़ा में। महाकाल का काटूं जाल ॥९॥
सतपुर जाय सुनूं धुन बीना। दरश पुरुष का पाऊं हाल १०
अलख अगम का शब्द जगाऊं। गाऊं गुन सतगुरु दयाल ११
राधास्वामी चरन परस कर। करूं आरती होउं निहाल १२

प्रीत लगी अब जस जलमीन ॥ १७ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० ३७ [शब्द ६९) सफा २४३

सुरतिया मचल रही । गुरु चरन पकड़ हठ नाल ॥ १ ॥
विनती करत दोऊ कर जोड़ी । हे राधास्वामी परम दयाल
मेहर करो अबही दिखलाओ । निज सरूप का दरस विशाल३
मन इंद्री बहु बिघन लगाते । काट देव उनका जंजाल ॥४॥
नाम खड़ग ले चढूं गगन पर । मारूं दल माया और काल॥५॥

सहस कंवल और गगन अटारी ।
सुन और महा सुन लख.लीन ॥ १३ ॥
२भंवर गुफ़ा होये चढी अधर में सतपुर जाय सुनी धुन बीन
सत पुरुष की की आरत कीनी ।
दई मेहर से मोहि दुरबीन ॥ १५ ॥
अलख अगम के पार गई अब मिल गये राधास्वामी गुरु परबी
राधास्वामी चरन सरन गह बैठी ।
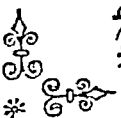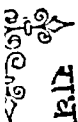
प्रीत प्रतीत बढ़ी गुरु चरनन । तन मन वार धरीन ॥ ७ ॥
माया ममता झींक रही अब । काल हुआ ग़मगीन ॥ ८ ॥
पांच दूत गुरु बल बस कीने । थाक रहे गुन तीन ॥ ९ ॥
राधास्वामी की क्या महिमां गाऊं ।
लिया अपनाय मोहि मिसकीन ॥ १० ॥
प्रेम रंग की बरखा कीनी । मन और सुरत हुए रंगीन ॥ ११
उमंग २ कर चढ़तें अधर में । शब्द २ रस लीन ॥ १२ ॥

प्रे० २ नं० श २९ (शब्द ६८) सफ़ा २२६

सुरतिया परख २ आज । गुरु मत लीना चीन्ह ॥ १ ॥
उमंग भरी सतसंग में आई । गुरु चरनन आधीन ॥ २ ॥
वचन सुनत बढ़ा भाव हिये में । तजत मान हुई दीन ॥ ३ ॥
भेद पाय मन उमंगा भारी सुरत शब्द में लीन ॥ ४ ॥
सब मत खोज जांच लिया मन में । गुरु मत सांचा दीन ॥ ५ ॥
धुन की खबर पाय अब घट में । मन दृढ़ निश्चय कीन ॥ ६ ॥

हिये में उमंग उठी अब भारी। आरत सतगुरू करूं सम्हारी।
विरह प्रेम का थाल सजाऊं। धुन झनकार जोत जगवाऊं।१२
उमंग २ कर आरत गाऊं। दृष्ट जोड़ मन सुरत चढ़ाऊं ॥१६॥
सहस कंवल होय त्रिकुटी धाऊं।
सुन के परे गुफ़ा दरसाऊं ॥ १७ ॥
सत्तलोक जाय बीन बजाऊं। अलख अगम के पार चढ़ाऊं१८
राधास्वामी प्यारे का दरशन पाऊं। उन चरनन में जाय समाऊं

राधास्वामी चरनन जीव निवेड़ा ॥ ८ ॥
राधास्वामी देस ऊंचसे ऊंचा । संत विना कोई जहां न पहुंचा
बड़ भागी जो सतसंग पावे । कर परतीत सरन में धावे १०
काल करम की फांसी टूटे । चौरासी का भरमन छूटे ॥ ११ ॥
राधास्वामी दया भाग मेरा जागा ।
चित चरन में सहजहि लागा ॥ १२ ॥
अपनी दया से लिया अपनाई। क्योंकर महिमा राधास्वामी गाई।
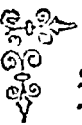
दृढ़ परतीत और प्रीत संवारन ॥ २ ॥
तन मन धन सब सतगुर अरपन। करम भरम सब दूर विडारन
गुरु सेवा हित चित से करना । सुरत दृष्ट दोऊ तिल में भरना
ऐसा जोग मेहर से पाऊं । राधास्वामी पै चल २ जाऊं ॥ ५ ॥
दीन अधीन रहूं गुरु चरना । उमंग सहित धारूं गुरु सरना ॥६॥
सतसंग महिमा कही न जाई । भेद गुप्त सब दिया लखाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी मत है अति कर गहरा ।

गुरु परताप कहा नहीं जाई। नित्त रहूं चरनन लौलाई ॥ १६ ॥
धनि दयाल जीव हित कारी। भौजल से मोहि पार उतारी।१७
छिन २महिमां प्रीतम गाऊं। राधास्वमी सदां धियाऊं ॥ १८ ॥
नित २ मैं गुन गाऊं तुम्हारे। धन ३ राधास्वामी प्यारे ॥ १९ ॥
नित २ मैं गुन गाऊं तुम्हारे। धन ३ राधास्वामी प्यारे ॥ १९ ॥

प्रे० वा० १ नं० श० ४६ (शब्द ६७) सफ़ा २६७

गुरु मुख सुरत प्रेम भर पूरी। सतगूरु चरनन सदा हजूरी॥१
बिरह अनुराग की नित नई धारन।

अलख अगम के पार निशाना। राधास्वामी पद दरसाना ॥ ९
गत मत वाकी कोई नजाने। मेहर दया होय तब पहिचाने ॥१०
नाम अनाम पदारथ सारा। दान दिया किया सबसे न्यारा।११
महिमां राधास्वामी. वरनी नजाई। उमंग २ चित चरन लगाई ॥
बड़े भाग जागे क्या कहना। नाम अमी रस निस दिन पीना १३
काल देस से तुरत हटाया। करम भरम सब दूर कराया ॥१४॥
चरन सरन दे लिया अपनाई। मन इच्छा सब दूर बहाइ ॥१५॥

प्रेम प्रीत से सामां लाया। सतगुरु सन्मुख आन धराया ॥२॥
अचिंत दीपका थाल बनाया। सहज दीप की जोत जगाया।३।
प्रेम प्रीत से आरत साजी। भंवर गुफ़ा ढिग सूरत गाजी ॥४॥
फेर २ कर आरत लाया। गुन गावत चित अति हरखाया।५।
क्या महिमां अब सतगुरु गाऊं। चरन सरन में हिया उमगाऊं
हुए प्रसन्न सतपुरुष दयाला। दिया दान मोहि किया निहाला
सत्त नाम की सुध अब पाई। रैन दिवस रहूं सुरत लगाई ॥८॥

सुन्न चढ़ जा बसो भाई । सुरत से मान सर न्हाना ॥ १५ ॥
महासुन्न चौक अंधियारा । वहां सेजा गुफ़ा बसना ॥ १६ ॥
लोक चौथे चलो सज के । गहो वहां जाय धुन बीना ॥ १७ ॥
अलख और अगम के पारा । अजब यक महल दिखलाना १८
वहीं राधास्वामी से मिलना । हुआ मन आज अति मगना १९

प्रे० बा० १ नं० श० १६ (शब्द ६६) सफा २०२

गुरु मुख प्यारे उमंग उठाई । सतगुरु आरत करूं बनाई ॥ १

फंसे तुम जाल में भारी । बिना इस जुक्त नंही खुलना ॥ ८ ॥
गुरू अब दया कर कहतं । मान यह बात चित धरना ॥ ९ ॥
भटक में क्यों उमर खोते । कहीं नहीं ठीक तुम लगना ॥१०॥
बसो तुम आय नैनन में । सिमट कर एक यहां होना ॥ ११ ॥
दुई यहां दूर होजावे । दृष्टी जोत में धरना ॥ १२ ॥
श्याम तज सेत को गहना । सुरत को तान धुन सुनना ॥१३॥
बंक के द्वार धस बैठी । तिरकुटी जायकर लेना ॥ १४ ॥
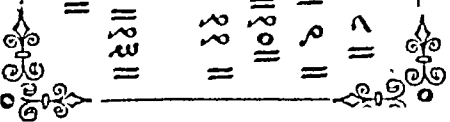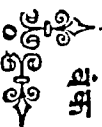
धाम अपने चलो भाई । पराये देश क्यों रहना ॥ १ ॥
काम अपना करो जाई । पराये काम नाहिं फसना ॥ २ ॥
नाम गुरु का सम्हाले चल । यही है दाम गठ बंधना ॥ ३ ॥
जक्त का रंग सब मैला । धुला ले मान यह कहना ॥ ४ ॥
भोग संसार कोई दिन के । सहज में त्यागते चलना ॥ ५ ॥
सरन सतगुरु गहो दृढ़कर । करो यह काज पिल रहना ॥६॥
सुरत मन थाम अब मैं । पकड़ धुन ध्यान धर गगना ॥ ७ ॥

राधास्वामी दया अलखपुर झांका ।
अगम पुरुष का दरशन ताका ॥ १६ ॥
राधास्वमी मेहर गई धूर धाम ।
निरखा पूरन पुरुष अनाम ॥ १७ ॥
राधास्वामी कीना पूरन काज ।
प्रेम भक्ति का पाया साज ॥ १८ ॥

सा० नं० श० १८ [शब्द ६५] सफ़ा ३४९

राधास्वामी त्रिकुटी शब्द सुनाया ॥ ११ ॥
राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई ।
हंसन संग मानसर न्हाई ॥ १३ ॥
राधास्वामी दया गुफा में जाय ।
सोहंग मुरली सुनी बनाय ॥ १४ ॥
राधास्वामी दया लखा सत रूप ।
सुरत धरा अब हंस सरूप ॥ १५ ॥

राधास्वामी कीनी सूरत सूर ।
वाजे घट में अनहद तूर ॥ ९ ॥
राधास्वामी निसदिन नाम जपाई ।
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाई ॥ १० ॥
तिल अंदर सूरत को जोड़ ।
राधास्वामी संग पहुंची नभ ओर
राधास्वामी जोत रूप दरसाया ।

राधास्वामी दई परतीत सरन में ॥ ५ ॥
राधास्वामी भेद दिया निज नाम ।
राधास्वामी भक्ती दई निष्कामं ॥ ६ ॥
राधास्वामी दीना चरन अधार ।
राधास्वामी किया भौजल से पार ॥ ७
राधास्वामी दुरमत कीनी दूर ।
राधास्वामी दिया प्रेम भरपूर ॥ ८ ॥

राधास्वामी काटें कर्म और धरमा ।
राधास्वामी दूर किये सब भरमा ॥ २ ॥
राधास्वामी जग से लियां निकार ।
राधास्वामी धोये सब हीं विकार ॥ ३ ॥
राधास्वामी अपनी टेक बंधाई ।
किरतम इष्ट सब दिये छुड़ाई ॥ ४ ॥
राधास्वामी दई मोहिं प्रीत चरन में ।

गगन चढ़ तिरबेनी न्हावे । भंवर लख सतपुर दरसावे ॥१६॥
अलख लख अगम का निरखे रूप ।
मिले पिता राधास्वामी कुलभूप ॥ १७ ॥
आरती सनमुख धार रही । चरन पर तन मन वार रही ।१८।
आरती सनमुख धार रही । चरन पर तन मन वार रही ।१८।

प्रे. बा. २ नं० श० ६४ (शब्द ६४) सफ़ा १३४

राधास्वामी महिमां कस करूं बरनन ।
राधास्वामी लिया लगाय मोहि चरनन ॥ १ ॥

होत जहां निस दिन परम विलास ॥ ११ ॥

रूप गुरु धारू हिरदे धियान । संत संग प्रीत बढ़ाऊं आन १

करूं अस निस दिन किरत सम्हार ।

भरम और संशय डारूं झार ॥ १३ ॥

होंय जब राधास्वामी गुरु परशन ।

दया कर काटें सब बनधनं ॥ १४ ॥

चेढ़ जब सुरत शब्द सम्हार । लखें फिर घट में मोक्ष दुआर

गुरू का दम २ अब गुन गात ६
नाम रस पियत रहूं दिन रात ।
रही मैं ठगीयन संग ठगाय ७
बहुत दिन तीरथ बरत पचाय ।
राधास्वामी सरन गही
सुफल मेरी नर देह आज भई। दीन दिल
बढ़त अब दिन २ अनुरागा ९
मेहर हुई चित चरनन लागा ।
वचन सतसंग के हिरदे धार ।
उमंग मन तियागन जगत लबार ॥ १० ॥
चरन में गुरु के चाहत बास ।

जगत आस अब सभी बिसारूं। राधास्वामी नाम हिये बिच धारूं

प्रे० १ नं० श० ८२ (शब्द ६३) सफ़ा ५२२

सुरत मेरी हुई चरन गुरु लीन। लखी घट मूरत मन हुआ दीन

धारती तन मन गुरु चरना। धारती मन में गुरु सरना ॥ २ ॥

जगत का परमारथ छोड़ा। करम संग अब नाता तोड़ा ॥ ३ ॥

भक्ति गुरु लागी अति प्यारी। संत मत हित चित से धारी ॥४॥

सुरत और शब्द जुगत अनमोल। धार हिये सुनती बालाबोल

भक्ति पौद जो गुरु ने लगाई। मन माली सींचत नित आई॥११
रंग वरंग फूल चुन लावत। हार बना सतगुरु पहिनावत॥ १२
उमंग सहित गुरु आरत साजी। घंटा शंख शब्द धुन गाजी।१३
कंचन क्यारी घट में खिलानी।गगन शिखर चढ़ चंद्र दिखानी
सोहंग मुरली गुफ़ा सुनाई। सत्त लोक धुन बीन बजाई॥ १५॥
अलख अगम का देख पसारा। राधास्वामी धाम निहारा॥ १६॥
चरन सरन राधास्वमी की पाई। भाग आपना लिया जगाई।१७
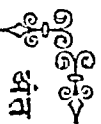
अंत समय की सुध सब भूला । माया रंग देख बहु फूला ॥ ४॥
सतगुर की परतीत न माने । उनकी गत मत नेक न जाने ॥५
मैं अति दीन अधीन अजाना । माया संग रहा लिपटाना ॥ ६॥
संतन की गत अगम अपारा । सुरत शब्द मतसार का सारा ७
राधास्वामी दया दृष्ट से देखा । ज्यों त्यों मोहिं चरनन में खेंचा ८
सतसंग में मोहि लीन लगाई । दर्शन दे घट प्रीत बढ़ाई ॥ ९ ॥
हुई प्रतीत उमंग हिये जागी । सुरत हुई चरनन अनुरागी ॥१०
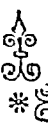
जहां खास नहीं आम ॥ १६ ॥
अलख अगम का दर्शन पाया । अब पाया बिसराम ॥ १७ ॥
आगे चली मिले राधास्वामी । भागा लोभ और काम ॥ १८ ॥
आरत कर २ मगन हुई अति ।
(प्रे० बा० १ नं० श० १७ शब्द ६२) सफा २०.
भूल भरम जग में अति भारी । सतसंग महिमां कोई न विचारी
मन चंचल जिव नाच नचाई । फिर २ भोगन में भरमाई ॥ २
आस भरोस भरोस धरे माया में । फूले बिगसे इसकाया में

जोत जगमगी थाली उसकी । पाया काल मुक़ाम ॥ ९ ॥
घंटा संख धूम अति डारी । हार गया अब जाम ॥ १० ॥
नाली पार चढ़ी स्रत विरहन । बसी तिरकुटी ग्राम ॥ ११ ॥
सुन्न सिखर जाडंका दीन्हा । पाई सीतल छाम ॥ १२ ॥
महासुन्न पर गाजन लागी । भंवर गुफ़ा कीन्हा विसराम ॥१३
वंसी अधर वजावन लागी । लज्जित कोटिन श्याम ॥ १४ ॥
सत्तलोक में जाय समानी । बीन बजे जहां आठों जाम ॥ १५ ॥

भाव भक्ति और प्रेम दिवानी । आरत लीनी साम ॥ २ ॥
करुणा निधि गुरु फूल विराजे । करें भजन निज नाम ॥ ३ ॥
सोभा भारी कहूं सम्हारी । विसर गये सब काम ॥ ४ ॥
तन मन की सुध भूल गई है । पाया अब आराम ॥ ५ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पर आई । कोन जपे मुख राम ॥ ६ ॥
हम सतगुर अब पूरे पाये । भेद दिये सतनाम ॥ ७ ॥
देखा तिल तोड़ा वह द्वारा । खिला कंजघट श्याम ॥ ८ ॥

देखते दीपदान घट में। निरखते जोत रूप पट में ॥ १३ ॥
गगन चढ़ देखत उगता सूर। सुन्न में निरखत चांदन पूर १४
भंवर में झलका अदभुत नूर। परेतिस सत्तनाम भरपूर ॥१५।
लखा फिर अलख अगम घर दूर। हुई राधास्वामी चरनन धूर
करें जहां आरत सेवक सूर। मेहर गुरू पाया आनंद पूर १७

सा० नं० श० ८ (शब्द ६१) सफा ६९६

बहुरिया धूम मचावत आई। चढ़न को सतगुर धाम ॥ १ ॥

बाल जिव मृरत में अटके । जुगन जुग सहते जम झटके ॥६॥
खिलौनं खेल गये घर भूल । पकड़ कर साखा तज दिया मूल
जुए में नर देही हारी । देतजम धिरकारी भारी ॥ ८ ॥
अभागी जीवन मानें वात । भरम ते नित तम चक्कर साथ॥९॥
रैन ज्योंमावस अंधियारी । रही कल धारा घट जारी ॥ १०॥
जगा जिन जीवन धुर भागा। लगा गुरु चरनन अनुरागा ११
सुरत मन नित घट में चढ़ते । सरन गुरु छिन २ दृढ़ करते १२

हरदम गुन गाऊं पिया प्यारे। कर दिया मुझको माला माल

प्र० वा० ३ नं० श० २ (शब्द ६०) सफा० ५००

दिवाला पूजें जीव अजान। भरमते फिरते चारों खान ॥ १ ॥
दिवाली संतन घर जागी। प्रेम रस मन सूरत पागी ॥ २ ॥
खिला अब चमन नूर हिये में। बढ़ी अब प्रीत गुरु जिये में ।३
साफ़ मैं कीना मन दरपन किया तन मन धन गुरु अरपन।४।
लगाई बाजी गुरु के संग। हार कर तन मनलिया गुरु रंग।५
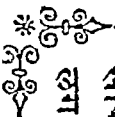
लीला अक्षर पुरुष निरख कर । महासुन्न गई सतगुरु नाल ॥
मुरली धुन सुन भंवर गुफ़ा में । महाकाल को दिया खिलाल
सतपुर जाय दरश पुर्ष पाया । धुन बीना सुन हुई खुशहाल ॥
अलख अगम के चढ़ गई पारा ।
मिलगये राधास्वामी दीन दयाल ॥ १४ ॥
उमंग सम्हार आरती धारी । मगन हुई अब पाय विसाल १५
मेहर दया से अंग लगाया । होय गई मैं आज निहाल ॥ १६ ॥

काल लगाये विघन अनेका । सन्मुख हुई ले नाम की ढाल ४

राधास्वामी दया काल बल तोड़ा मन इंद्री का काटा जाल ५।

काम क्रोध अहंकार लबारा लोभ मोह भी हुए पामाल ॥ ६ ॥

बिन गुरु दया भरमती जगमें राधास्वामी लिया मोहि आप सम्हाल

निरमल होय अधर को चाली निरखा अद्भुत जोत जमाल ८

घंटा संख छोड़ धुन नभ में आगे धंसी बंक की नाल ॥ ९ ॥

त्रिकुटी जाय दरस गुरु पाया सुन में न्हाय मानसर ताल

अंग लगाया मोहि कर प्यार॥१५॥
पिता प्यारे मेरे हुए दयाला
मिलगया आज प्रेम भंडारा। परम आनंद अनंत अपार ॥१६
पूरन भाग उदय हुए मेरे मिल गये राधास्वामी निज दिलदार

प्रे० वा० २ नं० श० ११४(शब्द ५९)सफा ३६८

सुरतिया ताक रही गुरु नैन रसाल॥ १॥
घेर घुमर घट भीतर आई पियत अधर रस हाल॥ २॥
बिसर गई सब सुध बुध तन की। दूर हुये मेरे सब दुखसाल।

मन इंद्री से जूझत निसदिन त्यागे सबही विकार ॥ ८ ॥
सजन भक्ति अभ्यास करतनित झांकत मोक्ष दुआर ॥ ९ ॥
सतगुर दया मेहर संग लेकर अधर चढ़त मन बिरह सम्हार
नभ में लखा जोत उजियारा । गगन जाय गुरु रूप निहार ११
सुन में जाय सरोवर न्हाई गुरु मिल गई महासुन पार ॥ १२॥
भंवर गुफ़ा का लखा उजाला सत पुरसुनी बीन धुन सार ।१३
अलख अगम का रूप निहरत पहुंची राधास्वामी धाम अपार
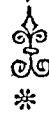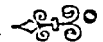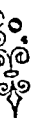
सुरतिया मौन रही गुरु दिया शब्द रस सार ॥ १ ॥
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आई हिये परतीत संवार ॥ २ ॥
सरधा सहित सुनत गुरु बचना सतसंग में धरप्यार ॥ ३ ॥
उमंग बढ़त दिन २ हिरदे में सेवा करत सम्हार ॥ ४ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा तजत न कीनी बार ॥ ५ ॥
कुल कुटंब से नाता तोड़ा । तज मन का अहंकार ॥ ३ ॥
सुरत शब्द का भेद नियारा । गुरु से पाया सार ॥ ७ ॥
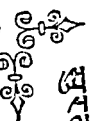
मन और सूरत चढ़ें अधर में सुनें जाय त्रिकुटी धुन तान १२
आरत धार गुरू चरनन में वहां से चढ़ाऊं अधर टिकान ।१३॥
सतपुर जाय करूं फिर आरत सत्त पुरुष के सन्मुख आन १४
वहां से राधास्वामी धाम सिधारूं राधास्वामी चरन लगाऊं ध्यान
उमंग प्रेम से आरत गाती। पाय गई अब प्रेम निधान ॥ १६
कैसे भाग सराहूं अपना। राधास्वामी प्यारे चरन समान।१७
प्रे० बा० २ नं श० ११२ (शब्द ५८) सफ़ा ३६२

क्यों करूं शुकराना आन ॥ ६ ॥

जो कुछ मांगा सो मैं पाया क्यों करूं शुकराना आन ॥ ६ ॥
सहज मिले मोहि दुरलभ देवा तन मन उनपर करूं कुरबान ७
राधास्वामी सम कोई और न जानूं
राधास्वामी हैं मेरे जान और प्रान ॥ ८ ॥
राधास्वामी हैं मेरे जान और प्रान ॥ ९ ॥
वाह २ मेरे सन्त गुरु दाता । वाह २ प्यारे पुरुष सुजान ॥ ९ ॥
वाह २ मेरे सन्त गुरु दाता । वाह २ प्यारे पुरुष सुजान ॥ ९ ॥

प्रेम सहित यहां आरत साधी होगई राधास्वामी चरनन दास
प्रे० वा० २ नं श० १११ (शब्द ५७) सफा ३६०

सुरतिया मोहरही आज निरख गुरू छबिशान ॥ १ ॥
निरत बिलास होत गुरु द्वारे देख २ मैं रहूं हैरान ॥ २ ॥
मेहर दया जस मुझपर कीनी क्योंकर उसका करूं बखान ३
मात पिता मेरे राधास्वमी प्यारे दया धार जग प्रगटे आन ४
बालक सम मोहि गोद बिठाया प्रेम भक्ति मोहि दीनी दान ५
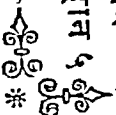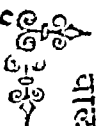
राधास्वामी नाम जपत निस वासर जग से रहती चित्त उदास

राधास्वामी चरन पकड़ कर बैठी मिल गई प्रेम सरन की रास

दया हुई सुत चढ़ी अधर में सहस कंवल दल किया निवास

वहां से चल त्रिकुटी में पहुंची निरखा लाल सूर परकाश १३

सुन में जाय किये अश्नाना देखा अक्षर पुरुष उजास ॥ १४ ॥

भंवर गुफ़ा होय सतपुर धाई बीन बजे जहां वहां निसवास १५

लखा जाय फिर अलख अगम को राधास्वामी चरनन कीना वास

समझ २ कर मानन उनको धर चरनन बिसवास ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई । निस दिन बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
गुरु चरनन बिन और न कोई धारत हिये में आस ॥ ५ ॥
भक्ति दीनता प्रेम बढ़ावत । करती चरन निवास ॥ ६ ॥
गुरू सरूप को ध्यान लायकर हिये में करती बास ॥ ७ ॥
उमंग उठी सेवा की घट में होगई दासन दास ॥ ८ ॥
निस दिन सेव रही गुरु चरना । चित से रहती उन के पास

भंवरगुफ़ा चढ़ अधर सिधारी हेरां रहा देख महाकाल ॥ १५॥
सत्त अलख और अगम के पारा
मिल गयें राधास्वामी पुरुप दयाल ॥ १६ ॥
आरत कर गह राधास्वामी चरना । आनंद पाय हुई तृसाल

प्रे० धा० २ नं० श० ११०(शब्द ५६)सफ़ा ३५७

सुरतिया भाव भरी आज गुरु संग करत विलास ॥ १ ॥
अमी रूप गुरु बचन अमोला । सुनत चित दे पास ॥ २ ॥

निज घर भेद दया से दीना । सुरत शब्द मारग दरसाल ॥८॥
सतसंग में मोहि लिया मिलाई । अचरज वचन सुनाये हाल
दृढ़ परतीत धरी चरनन में । मिला प्रेम का धन और माल
दीन निरख मोहि राधास्वामी प्यारे मेहर दया से सुरत चढ़ाल
नभ में होय गई गगनापुर । मार दिया दल काल कराल ॥१२॥
अनहद बाजे बाजन लागे । निरख रही सुत सूरज लाल ॥ १३ ॥
अक्षर धुन सुन आगे चाली । केल करत तहां हंसन माल ॥१४॥

सुरतिया लिपट रही । मन इंद्रियन नाल ॥ १ ॥
काल शिकारि घेरा डाला । माया आन विछाया जाल ॥ २ ॥
सव जीव उनकी फांस फंसाने । भूल गये मिज घर की चाल
करम भरम संग हुए वावरे । चौरासी में पड़े वेहाल ॥ ४ ॥
फरम भोग दुख सहँ घनेरा । को काटे उनका जंजाल ॥ ५ ॥
जो जीव आये सतगुर सरना । छूट गये उनके दुख साल ॥ ६
मेरा भाग उदय हुआ भारी सतगुर संत चरन पर साल ॥ ७॥
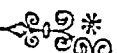
राधास्वामी भवरगुफ़ा दिखलाई।
मुरली धुन जहां बजे सुहाई ॥ १४ ॥
राधास्वामी सतगुर रूप लखाया।
राधास्वामी अलख अगम दरसाया ॥ १५ ॥
राधास्वामी धाम मिला मोहि भारी।महिमां ताकी अकह अपारी
दया हुई पद मिला इकंत । राधास्वामी कीना मोहि निचंत
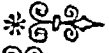
प्रे० बा० २ नं० श० १४ (शब्द ५५) सफ़ा १९९

राधास्वामी प्यारे सजन सुहाये ॥ १० ॥
राधास्वामी घट का भेद सुनाई ।
राधास्वामी धुन संग सुरत लगाई ॥ ११ ॥
राधास्वामी तिल पट खोल दिखाई ।
राधास्वामी घंटा संख सुनाई ॥ १२ ॥
राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाई ।
राधास्वामी चन्द्र रूप दरसाई
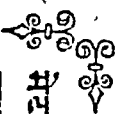
मेट दिया झगड़ा खटपट का ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम धुंध उजियारा ।
राधास्वामी विन जग विच अंधियारा ॥ ७ ॥
राधास्वामी सेवा करत रहूँरी । राधास्वामीर जपत रहूँरी ८
राधास्वामी काल और करम हटाये ।
राधास्वामी संसै भरम नसाये ॥ ९ ॥
राधास्वामी सतसंग वचन सुनाये ।

राधास्वामी संग चहूं निज वास ।
राधास्वामी संग नित करूं विलास ॥ ३ ॥
राधास्वामी खोल दई हिये आंखी ।
राधास्वामी चरन अमी रस चाखी ॥ ४ ॥
राधास्वामी भेद दिया मोहि घट का ।
राधास्वामी चरन मोर मन अटका ॥ ५ ॥
राधास्वामी दिया काल को झटका ।

राधास्वामी सत्तलोक पहुंचाया। सतपुरुष का दर्शन पाया १५
राधास्वामी अलख लोक दरसाई। अगम पुरुष का भेद जनाई
राधास्वामी वहां से अधर चढ़ाई। निज चरनन में लिया मिलाई

प्रे० बा० २ नं० श० १६ (शब्द ५४) सफ़ा १४७

राधास्वामी अगम अनाम अपारे। उन चरनन में रहूं सदारे १
राधास्वामी माता पिता पियारे।
राधास्वामी बिन नहीं और अधारे ॥ २ ॥

राधास्वामी दीना अगम संदेस सुरत शब्द का किया उपदेश
राधास्वामी दीनी सुरत चढ़ाय ।
सहस कंवल में बैठी जाय ॥ ११ ॥
राधास्वामी बंकनाल दिखलाई ।
त्रिकुटी शब्द सुनाया आई ॥ १२ ॥
राधास्वामी सुन में दिया चढ़ाई । हंसन संग मानसर न्हाई १३
राधास्वामी किया महासुन पार । सतसूर निरखा उजियार १४

राधास्वामी लिया मोहि आप सम्हाल ॥ ६ ॥
राधास्वामी भक्ती रीत सिखाई ।
राधास्वामी घट में प्रेम जगाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी जग से लिया छुड़ाई ।
सतसंग में मोहिं लिया मिलाई ॥ ८ ॥
राधास्वामी करम धरम दिये फाट ।
भरा प्रेम से मन का माट ॥ ९ ॥
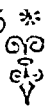
राधास्वामी दिये निकार विकारा ।
राधास्वामी लिया मोहि आज सुधारा ॥ ३ ॥
राधास्वामी सब विधि तोड़ा मान ।
मारे ताक वचन के बान ॥ ४ ॥
राधा स्वामी दीना सब बल तोड़ ।
राधास्वामी लीना मन को मोड़ ।
राधास्वामी मुझ पर हुए दयाल ।
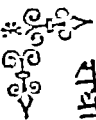
सुन्न में मानसरोवर न्हाय भंवर चढ़ मुरली बीन बजाय
सत्तपुर अलख अगम के पार मिला राधास्वामी दीदार
मेहर राधास्वामी छिन २ पाय करी वहां आरत प्रेम जगाय

प्रे० बा० २ नं० श० ५ [शब्द ५३] सफा १२०

राधास्वामी गुन गाऊं मैं दम २। राधास्वामी दूर करी मेरी हम २
राधास्वामी सा कोई और न हमदम।
राधास्वामी नाम जपूं मैं हरदम ॥ २ ॥

रूप गुरु हिरदे में धरना ॥ ८ ॥

सुरत को नित घट में भरना ।

भरोसा राधास्वामी मन में लाय । चरन राधास्वामी छिन २ ध्याय

दया ले बैरियन से लड़ना ॥ १०

दुःख सुख जग से नहिं डरना ।

करें राधास्वामी मोर सहाय । करम फल सहजहि देहिं भोगाय

रहे नहीं मन में कोई भ्रांत । १२

दया कर देवें घट में शांत ।

लगावें मन सूरत को जोड़ । सुनावें घट में अनहद शोर

चढ़े तव सहस कंवल दरसे गगन में गुरु मूरत परसे

गुरू के चरनन आन पड़ी । सुरत मांगे सरना मेहर भरी । १
काल मोहि दीन्हे दुख बहु भांत । करम संग लागी भारी सांट
जाल बहु माया दीन बिछाय । अनेक विधि मोको तंग रखाय
विना राधास्वामी नहीं कोई और । हटावे कालकरम का जोर
सरन गह चरनन में रहुं लाग। जगावें राधास्वामी मेरा भाग
मगन होय सुनता गुरु वचना । चाह जग सहज २ तजना
चरन में नित्त बढ़ाता प्यार । विघन मन इंद्री दूर निकार

फोड़ तिल सुने शब्द की गाज । सहसदल कंवल में देख समाज
परे चढ़ निरखें गुरु लीला। सुन्न चढ़ होवे चित सीला ॥ १३
भंवर धुन सुनकर हुई मगन सतपुर किया पुरुष दरशान॥ १४
निरख कर अलख अगम कानूर। मिला राधास्वामी दरस हजूर
प्रेम का मिला अजब मंडार। सुरत हुई हैरत संग सरशार
दया राधास्वामी निरख अपार। गाय रही महिमा उनकी सार

प्रे० बा० २ नं० श० ४६ (शब्द ५२) सफा ९३
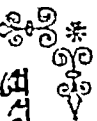
सुरत मन उमंग अधर को धाय ॥ ५ ॥
अवल मन राधास्वामी सरन सम्हार।दया गुरु मांगत बारंबार
मेहर बिन कस घट में चाले। विघन बहु माया ने डाले ॥ ७ ॥
काल ने लीना मारग घेर। मोह जग डाला भारी फेर ॥ ८ ॥
काम और क्रोध रहे भर माय। अनेक विधि माया संग भुलाय
गुरु बिन कौन हटावे काल। दया कर वे ही काटें जाल ॥१०॥
सुरत मन घट में होय निसंक। चढ़ें तब उमंग २ धुन संग
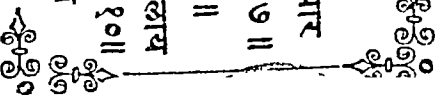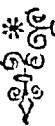
दया कर लीना अंग लगाय। दिया मेरा सब विधि काज बनाय

प्रे० बा० २ नं० श ४४(शब्द) ३४९ सफा ८८

मान तज चरनन आन पड़ी। सुरत करे आरत उमंग भरी।१।

दीन दिल लीना थाल सजाय। प्रेम गुरु चरनन जोत जगाय२

गुरु का सन्मुख कर दीदार। हुआ मन मगन हिये धर प्यार

तान कर दृष्टी तिल में जोड़। सुनत रही अनहद धुन घन घोर

विरह हिये राधास्वामी चरन जगाय।
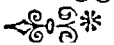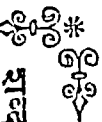
शब्द धुन सुनती सहित अनुराग ॥ ११ ॥
निरखती नभ चढ़ जोत अकार। गगन में गुरु सूरत उजियार
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय। गुफ़ा धुन मुरली सुनी बनाय
अमरपुर दरश पुरुष का लीन।अधरचढ़ अलख अगम गत चीन
परे तिस राधास्वामी धाम दिखाय।दरश कर लीना भाग जगाय
दीन अंग आरत चरनन लाय।
परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय ॥ १६ ॥
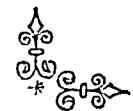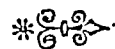
चरन गुरु छिन २ चित्त लगाय । रूप गूरु पल २ हिये बसाय
होत अस दिन २ निरमल अंग । चरन गुरु बाढ़त प्रेम सुरंग।
दया गुरु काटे सकल कुरंग । गावती गुरु गुन उमंग २ ॥ ७
उमंग कर करती गुरु सिंगार। हरखती अचरज रूपनिहार ॥८॥
देख गुरु लीला अजब बहार। चरन गुरु चित में बढ़ता प्यार
अजब गत गुरु की कर पहिचान। शब्द गुरु हियेमें धरती ध्यान
उलट मन इंद्रिय घट में लाग।

प्रे० बा० २ नं० श० २५ (शब्द ३४८) सफा ५१

सुरत प्यारी चित धर अगम विवेक

प्रेम अंग राधास्वामी धारी टेक ॥ १ ॥

जगत का देख सकल व्यौहार ।

डार दिया चित से समझ असार ॥ २ ॥

परख कर मन की चाल अनेक । कामना जग की डारी छेक ॥ ३ ॥

निरख कर इंद्रियन चाल कुचाल । जुगत से छिन २ राख सम्हाल

भंवर गढ़ कीना जाय निवास। करत धुन मुरली संग बिलास
अमुरपुर जाय सुनी धुनबीन। मगन हुई सतगुरु लीला चीन॥
अलखपुर पहुंची लगन बढ़ाय। पुर्ष का दर्शन अद्भुत पाय।१३
अगमपुर निरखा जाय समाज। करत जहां अगम पुरश कुलराज
परे तिस राधास्वामी धाम निहार। उमंगकर आई आरत धार
चरन में दिये धार तन मन।हुए राधास्वामी गुरु परशन
मेहर से लीना अंग लगाय। कहूं क्या आनंद बरनी न जाय
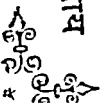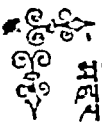
दया की गुरु ने कीनी दात। शब्द रस लेत सुरत दिन रात४
सरस धुन घट में बाज रही। त्याग दई मन से मान मई।५।
सुरत मन चालत निज घर बाट। अहंगमम छोड़ दिया निजघाट
सुनत रही घंठा संख पुकार। झांक रही सूरत जोत अकार७
वंक धस निरखा त्रिकुटी धाम। समझ लई महिमा मैं गुरु नाम८
दसमदर पहुंची पाट खुलाय। अमीरस छिन २ पियत अघाय
महासुन पार गई गुरु लार। सुनत रही गुप्त शब्द धुन चार

लिया मोहि राधास्वामी चरन लगाय
कहा कहूं महिमां बरनी न जाय

प्रे० बा० २ नं० श० २ (शब्द ५१) सफा ५

प्रीत गुरु छाय रही तन में। ध्यान गुरु लाय रही मन में। १।
गाय रही राधास्वामी गुन छिन में।
सुमर रही राधास्वामी पलछिन में ॥ २ ॥
परख रही महर गुरू जिये में। सुनत रही राधास्वामी धुन हिये में

सिखाई मुझको भक्ती रीत। शब्द की धारी घट परतीत
सुनूं मैं घट मैं अनहद घोर। करम के डाले बंधन तोड़
सहसदल लखता जोत उजार। गगन धुन ओअंग संग पियार
सुन्न धुन सारंग सार लई। गुफ़ा में मुरली सुनत रही
अमरपुरु दरश पुरूप पाया। बीन धुन सुन अति हरखाय
अलखपुर वहां से पहुंचा धाय। अगम पुर लीना पुर्ष रिझाय
आरती अद्भुत अब साजी सुरत राधास्वामी चरनन राची
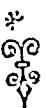
पाऊं कस दरशन सतपुर्ष पायं ॥ ५ ॥
परमगुरु राधास्वामी दीन दयाल। दयाकर लीना मोहिं सम्हाल
मेहर कर लिया सतसंग मिलाय।
भाग मेरा सोता दीन जगाय ॥ ७ ॥
भेद निज मारग का मोहि दीन।
सुरत मन हुए चरन लौलीन ॥ ८ ॥
सहज मोहि जग से न्यारा कीन प्रीत मेरे हिरदे में धर दीन
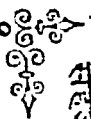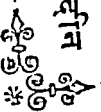
मेहर राधास्वामी कीनी आज । हुआ मेरा सब विधि पूरन काज
प्रे० बा० १ नं० श० १०८ शब्द ५० सफ़ा ५८३

जीव सब मोहे माया रंग । नहीं कोई जाने सतसंग ढंग॥१
करम और धरम रहे लिपटाय । बुद्धि और विद्या संग खपाय
ख़बर सत परमारथ नहिं पाय । भरम कर तीरथ बरत पचाय
मेरे मन बिरह उठी भारी । भोग जग लागे सब खारी ॥ ४ ॥
विकल मन खोज रहा बन माहिं ।

रूप गुरु धरत हिये में ध्यान । सुमिरता नाम अमीं रस खान
सुरत मन लाग रहे नभ द्वार । झड़त जहां छिन २ अमृत धार
सुनत रही घंटा संख पुकार । गगन चढ़ झांकत गुरु दरबार१२
दसमदर सुनती सारंग सार । भंवर चढ़ लखा सेत उजियार
सत्तपुर सुनी बीन धुन जाय । अलख और अगम में पहुंची धाय
निरख राधास्वामी धाम उजार । सुरत मेरी हुई अजब सरशार
उमंग की थाली कर में धार । प्रेम अंग आरत गाऊं सार॥१६॥

संत मत भेद मिला अति गूढ़ । जगत के सब मत देखे कूड़

रहे सब माया मन के वार । करम वस वहे चौरासी धार ४

भाग मेरा जागा अति गंभीर । चरन में राधास्वामी पाई धीर

लखो में गुरु की अचरज क्रांत । पाई में घट में पूरी शांत ६

चढ़ाया मोपे अचरज रंग । दिया तज जग जीवन का संग ७

हुई मोहिं गुरु की दृढ़ परतीत । चरन लागी अचरज प्रीत ८

लगा मोहि गुरु मारग प्यारा । सुरत और शब्द भेद साधा ९

प्रेम गुरु चरनन आधारी । हुई मैं राधास्वामी बलिहारी १६

करी अब यह आरत पूरन ।

सुरत लगी प्यारे राधास्वामी चरनन ॥ १७ ॥

प्रे० बा० नं श० ९० (शब्द ४९) सफ़ा ५४४

चरन गुरु नित बढ़ाऊं लाग । चेत कर रहूं नैन गुरु ताक १।

बचन सुन अटक भटक सब छोड़ ।

रहूं नित चरनन में चित जोड़

सुन्न में खिली चांदनी सेत । ररंग धुन सुनती कर २ हेत ॥ १०

गुरू संग गई महासुन पार । भंवर चढ़ सुनी वांसरी सार ॥ ११

सतपुर दरश पुरुष का लीन । मगन होये सुनी मधुर धुन वीन

अलख और अगम का पाया ज्ञान

चरन राधास्वामी परसे आन ॥ १३ ॥

करी वहां आरत उमंग २ । प्रेम का जहां नित वरसत रंग १४

कौन यह पावे घट गुर ज्ञान । मेहर राधास्वामी दीना दान

जगाती छिन २ नई २ प्रीत
पकाती घट में गुरु परतीत । दरस गुरु करती तिल आसन४
साफ़ करमांजूं घट बासन । अमीं जल भरूं उमंग अंग साथ
शब्द की डोरी गहकर हाथ । सुरत मन रचिये तामें आन ॥७
नाम रस करती घट में पान । दरस गुरु करती त्रिकुटी धाय
विरह की अगनी घट सुलगाय ।
बाज रही जहां नित धुन मिरदंग ।
चमक रहा सूरज लाली रंग ॥ ९ ॥

संत बिन कोई न उतरे पार। दया बिन मिले न निज घर बार
जगाया राधास्वामी मेरा भाग। रही मैं उनके चरनन लाग
सरन दे पूरा कीना काम। जपूं मैं नित २ राधास्वामी नाम

प्रे० बा० १ नं० श० ८७ [शब्द ४८] सफ़ा ५३६

प्रेम गुरु मगन हुआ मन मोर। दिये सब धंधे जग के छोड़ ॥ १
पीसती मनको कर बारीक। छोड़ती छिन २ घर तारीक ॥ २ ॥
गुरू बल पल २ हिर दे धार। कूटती काम क्रोध अहंकार ॥३॥

मगन हुई दरशन जोत निहार। छुट गए काम और क्रोध लबार
झांक गुरु दरशन गगन मंझार। सुन्न चढ़ नहाई वेनी धार।९।
महा सुन घाटी चढ़ गुरूलार। लगा धुन मूरली से अब प्यार
परे तिस दरशन पुरुप निहार। सुनत रहुं मधुर बीन धुन सार
अलख चढ़ गई अगम के पार। मिले राधास्वामी पुरुप अपार
कहूं क्या सोभा धाम निहार। प्रेम का खुला जहां भंडार
बेद नहीं जाने यह मत सार। ज्ञान और जोग रहे थक हार

वचन सुन चित में आया भाव। मिला अब नर देही में दाव २
चरन गुरु भक्ति करूं पूरी। जीत कर जाऊं घर मूरी ॥ ३ ॥
दया विन क्या मुझ से बन आय।
करें राधास्वामी मोर सहाय ॥
भेद मोहि दीना घट का सार। पकड़ धुन जाऊं भौ के पार
मेहर की दृष्टी मोपर कीन। हुई में राधास्वामी चरन अधीन
सुरत मन झांक रहे नभ द्वार। शब्द धुन सुनत रही धर प्यार

सुहावन रूप जोत ताकूं । गगन चढ़ सार वेद भाखूं ॥ १३ ॥
चांदनी खिलगई दसवें द्वार । बजत जहां किंगरी सारंग सार
भंवर में बंसी गाज रही । सत्तपुर बीना बाज रही ॥ १५ ॥
अलख और अगम नगर देखा । मूल पद राधास्वामी अब पेखा
गाऊं गुन राधास्वामी बारंबार । दिया मोहि भौजल पार उतार

प्रे० बा० १ नं श ८५ (शब्द ४७) सफ़ा ५३१

चरन में राधास्वामी जब आई । प्रीत मेरे हिये अंदर छाई १

कहूं क्या महिमां राधास्वामी गाय ।
लिया मोंहि अपने चरन लगाय
भाग मेरा धुरका दिया जगाय । प्रीत मेरे हिये में दई वसाय
शब्द का भेद दिया पूरा । लगा घट वजने धुनतूरा ॥ १० ॥
प्रेम अंग आरत राधास्वामी धार ।
रहूं में निसदिन चरन सम्हार ११
ध्यान गुरु धरती नैनन ताक। सुनत रहूं घट में नित गुरू धाक

दरस गुरु जब से मैं कीना । हुआ मन प्रेम रंग भीना ॥ १ ॥
प्रीत गुरु चरनन लाग रही । सुरत सतसंग में जाग रही ॥
हुआ मन संगत में लौलीन । चरन में गुरु के दीन अधीन ३
जगत जिव भूले करमन में । बरत और तीरथ में भरमें ॥४॥
पूजते देवी और देवा । मिला नहीं सुरत शब्द भेवा ॥ ५ ॥
क़दर सतसंग की नहीं जानें । बचन सतगुरु का नहीं मानें ६
करम बस जनमे बारंबार । भरम कर बहें चौरासी धार ७

करूं गुरु आरत चित्त सम्हार । चढ़ाऊं सूरत धुन की लार१३
सहसदल लखूं जोत उजियार । शब्द धुन घंटा शंख सम्हार
वहां से त्रिकुटी पहुंचूं धाय । ओअंग संग धुन मिरदंग बजाय
सुन्न में मानसरोवर न्हाय । गुफ़ा धुन मुरली सुनिया जाय१७
अमरपुर दरशन सतपुरुष पाय ।
चरन में राधास्वामी रहूं लिपटाय ॥ १७ ॥

प्रे. बा. १ नं० श० ६८ (शब्द ४६) सफ़ा ४७६

गुरू ने दीनी जुगत बताय । शब्द में छिन २ सुरत लगाय
प्रेम संग चालो गुरु की लार । होय तब झूठा जगत असार ॥८
काल के फंद अस तोड़ों । चरन में राधास्वामी मन जोड़ों ॥९।
उमंग मन जुगती लई सम्हार । चलूं मैं गुरु संग पंथ निहार ॥
दया गुरु छूटे लोभ और काम । पाऊं मैं एक दिन सत गुरू धाम
नित गुरु चरन बढ़ाऊं प्रीत । बसाऊं हिये में दृढ़ परतीत॥१२

आज मेरा जागा भाग सही। उमंग मन राधास्वामी सरन गही
चरन राधास्वामी पकड़े आय। करम झुग २ के लीन कटाय॥
सरस मन राधास्वामी दरशन पाय।
बिगस तन राधास्वामी महिमां गाय॥ ३ ॥
काल का जाल बड़ा भारी। जीव सब घेर लिये सारी॥ ४॥
भोग बहु माया लीन उपाय। लिया सब जीवन सहज फंसाय
मेहर हुई मुझपै राधास्वामी की। पाई मैं सुध बुधनिज घर की

जीव सब दुख सुख पाया री ॥१२

तीन गुन देव पुजाया री। संत बिन कौन जनायारी ॥ १३ ॥

खबर निज घर नहिं पायारी। सरन राधास्वामी आयारी ॥१४॥

बड़ा मेरा भाग सुहायारी। मेहर से धुर पहुंचायारी ॥ १५ ॥

दयाकर भेद बतायारी। चरन में सीस नवायारी ॥ १६ ॥

कहां लग महिमा गायारी। उलट राधास्वामी ध्यायारी ॥ १७ ॥

दया गुरु काज बनायारी।

प्रे० बा० १ नं० श० ५७ (शब्द ४५) सफ़ा ४५१

काल और करम हटायारी। पाप और पुन्न नसाया री ॥ ५॥
सहसदल जोत जगाया री । गगन धुन गरज सुनाया री ॥ ६
सुन्न चढ़ वेनी न्हायारी । गुफ़ा चढ़ सोहंग गाया री ॥ ७ ॥
सत्तपुर पुरुष मनायारी । वीन धुन अधर वजायारी ॥ ८ ॥
अलख और अगम धाया री । दरश राधास्वामी पाया री ॥ ९
प्रेम अंग आरत गायारी । अनामी पुरुष रिझाया री ॥ १० ॥
धाम यह कोई न पायारी । काल ने जग भरमायारी ॥ ११ ॥
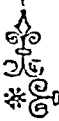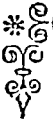
को समझे यह अकथ कहानी १६
प्रेम सदा हुई दरस दिवानी। धन पाती यह प्रेम भंडार। राधास्वामी आपहि लिया सम्हार

प्रे० बा० १ नं० श० २० (शब्द ४४) सफ़ा २५९

चरन गुरु मनुआं लागारी। मोह जग छिन में त्यागारी ॥ १ ॥
गाजता धावत आयारी। संग गुरु पूरे पाया री ॥ २ ॥
बचन गुरु भजन कमायारी। हिये में नाम जगायारी ॥ ३ ॥
प्रीत गुरु चरन बढ़ायारी। सुरत मन अधर चढ़ायारी ॥४॥

राधास्वामी मेहर हुई जब भारी।
घट में देखूं जोत उजारी ॥ १० ॥

वहां से त्रिकुटी धाम समाऊं। गुरु पद परस सरोवर न्हाऊं॥
तस मन से अब होय अकेल। हंसन संग करूं नित केल॥१२॥
आगे जाय महासुन पारा। सुनत रहूं सोहंग धुन सारा १३
सतपुर अलख अगमपुर देख। दरशन राधास्वामी अद्भुत पेख
आरत गाऊं उमंग २। मिट गई अब मेरी सब ही उचंग ॥१५॥

राख रही विस्वास सम्हारी ॥ ५ ॥

चरन गूरू नित मन में ध्याती ।

गूरू सरूप हिये माहिं बसाती ॥ ६ ॥

तबतो काल करम रहे हार । पहुंच गई मैं गूरु दरबार ॥७॥

दरशन पाय हरख हुआ भारी

तन मन धन चरनन परवारी

भजन भक्ति और पेम बढाऊं सूरत शब्द ले नभ पर धाऊं
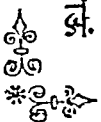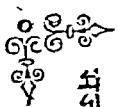
यह निज धाम पायगा सोई ॥ जापर दया राधा स्वामी की होई

प्रे० २ नं० श० ५९ (शब्द ४३) सफ़ा २९८

विरह भाव घट भीतर आया । मन अंतर अनुराग समाया १
तड़फ रहूं दरशन के कारन । मगन होय देखूं घट चांदन ॥२॥
शब्द जुगत जो मोहिं बताई । प्रेम अंग ले करूं कमाई ॥ ३ ॥
काल विघन बहु भांत लगाई । रोग सोग संग अधिक झुमाई॥
पर राधास्वामी अस किरपा धारी ।
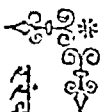
ररंकार धुन सुनी झनकारा ॥ ११ ॥

मान सरोवर निरमल धारा । कर अश्नान हुआ अब न्यरा ॥१

भंवर गुफा चढ़ सतपुर धाया । सत्त नाम का दरशन पाया ॥

हुये प्रसन्न सत पुरुष दयाला । अलख अगम का लखा उजाला

राधा स्वामी दरस मेहर से पायाउमंग २ कर आरत गाया १५

शोभा राधास्वामी कियोंकर गाऊं ॥

वार वार चरनन वल जाऊं ॥ १६
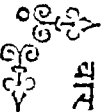
शब्द बिना कोई पार न जाये ॥ ६ ॥

मेराभाग जागा अति भारा । सतगुरु ने मोहि आप संवारा७

परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।

सहज मिले और किया निहाला ॥ ८ ॥

गुरु परताप सुरत चढ़ आई । मगन हुआ मन धुन सुन पाई

जोत निरंजन रहे अलगाई । त्रिकुटी महल गुरु गैल लखाई

अक्षर पुरुष किया अति प्यारा ।

प्रे० बा० १ नं० श० १८ (शब्द ४२)सफ़ा २०५
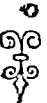
बिरह अनुराग उठा हिये भारी । सतगुरु दरशन करूं सुधारी

बाल अवस्था दरशन पाये । मेहर हुई गुरु चरन लगाये ॥२॥

मैं अजान गत मतनहीं जानी । दया हुई तब कुछ पहिचानी

चरन कंवल गुरु हिय बिचधारे । करमभरम संशय सब टारे

दरशन कर हिंय पीत बढ़ाई । बचन सुनत परतीत सवाई॥५॥

बिन सतगुरु सब बार रहाये ।

आगे चल पहुंची सतपुर मे । मधुर बीन धुन सुनी अधर में
अलख अगम का दरशन करके ।
राधास्वामी चरन जाय कर परसे ॥ १३ ॥
प्रेम उमंग से आरत धारी । राधास्वामी मेहर करी अति भारी
मैं अनजान मरम नहिं जाना । अपनी दया से गुरु दियो दाना
मन और सुरत चरन में मेलूं । बाल समान गोद गुरु खेलूं ॥
राधास्वामी काज किये सब पूरे । सुरत हुई उन चरनन धूरे
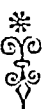
अमी झड़ंत बरसत चौधारी।
रूप अनूप चंद्र उजियारी ॥ ८ ॥
और विलास अनेक दिखाई।
हिये बिच प्रीत प्रतीत बढ़ाई ॥ ९ ॥
मेहर दया राधास्वामी की परखी ।
ऊपर चढ़ झांकी सत खिड़की ॥ १० ॥
सत्त लोक का द्वारा सोई। मुरली धुन सुन सुरत समाई ११

उमंग उठी हिये में अति भारी ।
सतगुर चरनन आरत धारी ॥ ४ ॥
विरह अनुराग थाल घट लाई ।
प्रेम लगन की जोत जगाई ॥ ६ ॥
गरजत गगन शब्द धुन आई । घंटा शंख मृदंग बजाई ६
सुरत जगी लागी दस द्वारे ।
मगन हुई सुन धुन झनकारे ॥ ७ ॥
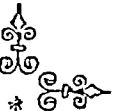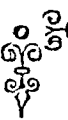
राधास्वामी प्यारे दुख हर मेरे। अब नहिं बिछड़न होय
प्रे० बा० १ नं० श० ११ (शब्द ४१) सफा १९२

आज सखी सब जुड़ मिल आओ।
राधास्वामी की आरत गाओ ॥ १ ॥
आनंद मंगल चहुं दिस छाई। प्रेम घटरिया बरखा लाई॥२॥
तन मन सुरत भींज रही सारी।
फूल रही भक्ती फुलवारी ॥ ३ ॥

वारंवार करूं मैं विनती । मांगूं दान सो दीजे मोहि ॥१३॥
दरशन वचन अमीं परशादी ।
चरना मृत मुख अमृत दोय ॥१४॥
प्रेम भक्ति और विलास नवीना ।
दिन प्रति मोहि परापत होय ॥१५॥
कभी न विछडूं चरन सरन से ।
यही दासको वख़शिश होय ॥१६॥
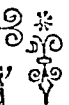
प्रेम सहित सुत शब्द समोय ॥ ८ ॥
अगनित जीव उवार लिये हैं। पाप पुन्य सब डार धोय ॥९॥
दासनि काम भरमता जगमें।
अपनी दयासे दिया दरशन मोहि ॥१०॥
करम भरम के बंधन काटे। जन्म २ के पातक खोय ॥११॥
जैसी लीला राधास्वमी धारी।
ऐसी जगमें हुई है न होय ॥१२॥
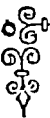
भंवरगुफा पर सत भवन में। सत्त पुरुष की बैठक होय ॥४॥
राधास्वमी महल अनूप अपारा। अलख अगम परे सोय ॥५॥
राधास्वामी परम उदार दयाला।
जीव दयाकर समरथ सोय ॥ ६ ॥
सतगुर रूप धार जग आये।
काल करम दोऊ बैठेराय ॥ ७ ॥
निज मारग परघट कर गाया।
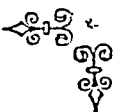
प्रे० बा० १ नं० श० ६ (शब्द ४०) सफ़ा १०७

सखीरी मेरे दिन प्रति आनंद होय ॥ टेक ॥
पाये दरश राधास्वामी चरन के । दिन प्रति आनंद होय ॥१॥
राधास्वामी मेरे परम पियारे ।
उन बिन और न दीखे कोय ॥२॥
सहस कंवल और गगन मानसर ।
राधास्वमी अंस विराजत दोय ॥ ३ ॥
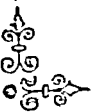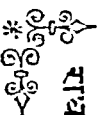
फिर शब्द जोत जगाय कर भर प्रेम आरत गावता ॥१४॥
दृढ़ प्रीत वस्तर साजकर और भाव भक्ती भोग धर।
मन चित से अज्ञा मानकर प्यारे सतगुरु को रिझावता ॥१५॥
फिर अलख अगम को धाइया धर आदि अंत जो पाइया।
राधास्वमी चरन समाइया धुर धाम संत कहावता ॥१६॥
गुरु महिमां क्योंकर गाइया राधास्वामी मेहर कराइया।
निज देस अपना पाइया धन धन्य भागसरावता ॥१७॥

गुरु तुझपे मेहर दयाकरैं पल २ तेरी रक्षा करैं।
मन उलट कर सीधा करैं फिर गगन मांहि धावता ॥११॥
नभ मांहिं दर्शन जोत कर त्रिकुटी चरन गुरु परस कर।
सुन माहिं सारंग साजकर वेनी में जाय अन्हावता ॥१२॥
वहां से सुरत आगे चली सोहंग मुरली धुन सुनी।
सतपुर्ष के चरननरली धुन सार शब्द सुनावता ॥१३॥
मन थाल लीन सजाय कर और सुरत वाती बनाय कर।

इनमें पड़े वेहाल हैं सव जीव धोखा खावता ॥७॥
जोचाहे तू उद्धार को सच्चे गुरूको खोजलो ।
कर प्रीत और परतीत तू फिर चरन सरन समावता ॥८॥
राधास्वामी नाम सम्हारले गुरु रूप हिरदे धारले ।
सुतशब्द मारग सारले गुरु महिमा निस दिन गावता ॥९॥
सतसंग कर चित चेत कर गुरु प्रीत कर हिये हेत कर ।
मन काल मारो रेतकर सुत शब्द मांहि लगावता ॥१०॥

कोई मौन साधें जप करें कोइ पंच अगिन धूनी तपे ।
कोइ पाठ होम और जगकरें कोइ ब्रह्म ज्ञान सुनावता ॥४॥
कोई देवी देवा गावते कोइ राम कृश्नधियावते ।
कोइ प्रेत भूत मनावते कोइ गंगा जमना न्हावता ॥५॥
कोइ दान पुन्न करावते ब्रह्मन्न भेख खिलावते ।
कोइ भजन गाय सुनावते कोइ ध्यान मनमें लावता ॥६॥
यह सबजो पिछली चालहैं काल और करम के जालहै ।

प्र० बा० १ नं० श० ११ (शब्द ३९) सफा० १७
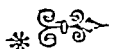
मेरे गुरु दयाल उदार की गत मत नहीं कोई जानता ।
कासे कहूं यह भेद मैं चितसे नहीं कोईमानता ॥ १ ॥
जग मैं अंधेरा घोर है मायाका भारी शोरहै ।
काल और करम भरज़ोरहै भरमों में जीव भरमावता ॥२॥
तीरथ वरत में भरमते मंदिर में मूरत पूजते ।
पोथी कितावें ढूंढते निज भेद नहिं कोई पावता ॥३॥
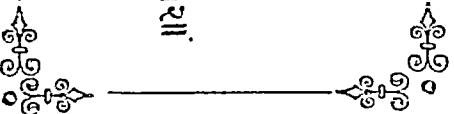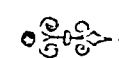
चल सतगुरु सचखंड आई। यह आरत अद्भुत गाई ॥ १३ ॥
चढ़ आगे अलख दिखाई। गुरु अगम पुर्ष दरसाई ॥ १४ ॥
लीला कुछ अचरज वाही न जाई। ज्ञानी और जोगी भेद न पाई॥
सब काल देश में गये भुलाई।
दयाल देश यह संत बताई ॥ १६ ॥
राधास्वामी महल अजब में पाया।
रूप अगाध जाय नहिं गाया ॥ १७ ॥

धुन अनहद शोर मचाई। सुखमन में सुरत समाई ॥ ६ ॥
गढ़ बंक तोड़ा भाई। धुन ओंकार सुन पाई ॥ ७ ॥
आगे को निरत बढ़ाई। श्यामा तज सेत समाई ॥ ८ ॥
चंदा जहां नूर दिखाई। हंसन की पांत जुड़ाई ॥ ९ ॥
मुक्ता जहां चुनर खाई। आतम निज अक्षर पाई ॥ १० ॥
सतगुरु फिर किरपा धारी। हुइ महासुन्न धस पारी ॥११॥
अनहद धुन मुरली बाजी। ढिग भंवर गुफा सुत गाजी ॥१२॥
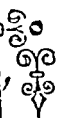
रोमर मन मगन । आरती पूरन कीजै ॥ १७ ॥

सा० नं० ७ श० [शब्द ३८] सफ़ा ६७१

गुरु मिले अमीरस दाता । मैं अधम विषय मद माता ॥ १॥
मैं नीच अजान अनारी । श्रुत कीन्ही शब्द दुलारी ॥ २ ॥
गुरु महिमां छिनर गाता । मन निजमन चरन लगाता ॥ ३ ॥
घट में नित आरत करता । श्रुत सहस कंवल मैं धरता ॥४॥
जहां जोत जगाई न्यारी । तिल तोड़ा गगन सिहारी ॥ ५ ॥
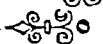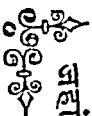
सत्तनाम धुन वीन । ताहि में सूरत दीजै ॥ १० ॥
अलख अगम दरबार । देख घट प्रेम भरीजै ॥ ११ ॥
सुरत सुहागन हुई । काल बल सबही छीजै ॥ १२ ॥
धोखा सबही मिटा । पुरुष संग छिन२ रीझै ॥ १३ ॥
संत कृपा जब होय । सुरत अपने घर सीझै ॥ १४ ॥
सतसंग करो बनाय । अमी का छींटा लीजै ॥ १५ ॥
राधास्वामी नाम । हिये में आन धरीजै ॥ १६ ॥
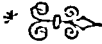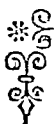
थाल उमंग और जोत विरह । घट परघट कीजै ॥ ३ ॥
सत गुरु होय दयाल । दान फिर शब्द मिलीजै ॥ ४ ॥
शब्द२ चढ़ गगन । सुन्न में अमृत पीजै ॥ ५ ॥
मानसरोवर वास । हंस संग खेल खिलीजै ॥ ६ ॥
भंवर द्वार धस जाय । सेत पद आस धरीजै ॥ ७ ॥
महा सुन्न का घाट । दया सतगुरु से लीजै ॥ ८ ॥
भंवरगुफ़ा धुन बांसरी । आश्चर्य सुनीजै ॥ ९ ॥
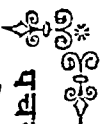
पचरंग बाना पहन बिराजे। सोभा धारी आज नई ॥ १४ ॥
जीव काज निज भवन छोड़कर। जमा दूध फिर होत दही १५
मथि २ माखन काढ़ निकारा। बिरले गुरमुख चाख चखी १६
राधास्वामी दीन अवाज़ा। चढ़ो अधर निज धाम पई ॥ १७ ॥

सा० न० श० नं० १२ (शब्द ३७) सफा १३१

प्रेम प्रीत घट धार। आरती राधास्वामी कीजे ॥ १ ॥
मन माधो तन वास। सुरत चरणन में दीजे ॥ २ ॥
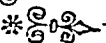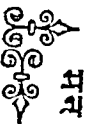
क्या २ कहूं कहन गति नाहीं। सुरत शब्द मिल एक हुई॥७॥
रहन गहन की बात नियारी। संत बिना कोइ नाहिं कही॥८॥
सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न लख। भंवरगुफा पर ठाट ठई॥९
सत्तनाम सतधाम निरख धुर। अलख अगम गति पाय गई१०
सुरत निरत संग चली अगाड़ी। राधास्वामी २ चरण मई११
अब आरत सिंगार सुधारी। प्रेम उमंग भी बहुत चढ़ी ॥१२॥
काल कला सब दूर बिडारी दयाल सरण अब आन लई॥१३॥

चरण गुरु हिरदे धार रही ॥ टेक ॥
भौकी धार कठिन अति भारी । सो अब उलट वही ॥१॥
गुरु विन कौन सम्हारे मन को । सुरत उसंग अब शब्द गही
कोटिन जन्म भरमते वीते । काहू मेरी आनन बांह गही॥३॥
अबके सतगुरु मिले दयाकर । शब्द भेद उनसार दई ॥४॥
नौको छोड़ द्वार दस लागी । अक्षर मथ नौनीत लई ॥५॥
नौका पार चली अब गुरु बल । अगम पदारथ लीन सही॥६॥

करूं अब आरत उनकी गाय ।
सुरत मेरी राधास्वामी लीन जगाय ॥ १५ ॥
जोग और ज्ञान रहे मुरझाय ।
संत कोई विरले दिया सुझाय ॥ १६ ॥
राधास्वामी अचरज खेल दिखाय ।
चरण में राधास्वामी गई समाय ॥ १७ ॥
सा० नं० श० ११ (शब्द ३६) ॥ सफा १२०

राधास्वामी लीला कहूं छिपाय।
लिया मोहि अपने अंग लगाय॥ ११॥
आरती पूरी कीन्ही आय। कहूं क्या अस्तुत राधास्वामी गाय
परम पद पाया काल भजाय।
वेद भी रहा बहुत शरमाय॥ १३॥
भेद यह मिला न अब तक काय।
दया कर राधा स्वामी दिया जनाय॥ १४॥

बीन धुन पाई सुरत लगाय ॥७॥
अलख और अगम रहा दरसाय ।
परे तिस राधास्वामी धाम मिलाय ॥८॥
जहां अब आरत साज सजाय ।
लिये मैं राधास्वामी खूब रिझाय ॥९॥
कहं क्या महिमां बरणी नजाय ।
सुरत मेरी छिन २ रही मुसकाय ॥१०॥
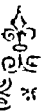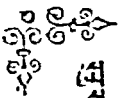
सुरत आज लगी चरण गुरु धाय। श्याम तज सेत ग्राम ठहराय
देख निज नाली बंक समाय। त्रिकुटी चढ़ कर पहुंची आय
हिये बिच पंकज अजब खिलाय। सेत पद धजा अगम फहराय
हंस जहां बाजे रहे बजाय। गुरु अस लीला दई दिखाय
रागनी नई २ नित्त सुनाय। सेत सब अक्षर दीन बताय ५
घाट निह अक्षर पाया जाय। गुफा में धुन यक सुनी बनाय
पदम सत निरखा भरम नसाय।

घंटा संख सुनत हरखावत । पार चढ़त धस नाली वंक ॥१२॥
गरज मृदंग सुनत चली आगे । वेनी न्हावत हंसन संग ॥१३॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी । महा काल रहा दंग ॥१४॥
सतपद पार गई निज घर में । राधास्वामी धाम अरूप अरंग॥
राधास्वामी दीया प्रशाद होय कर ।
प्रेम प्रशादू और भक्ति उतंग ॥ १६ ॥

सा० नं० श० १० (शब्द ३५) सफा ११८

याद बढ़ावत नाम पुकारत । सहजं हटावत सबही उचंग ॥६॥
रूप धियावत शब्द सुनावत । सुरत चढ़ावत जैसे पतंग ॥७॥
सुरत खिलावत मन बिगसावत ।
नई उठावत प्रेम तरंग ॥ ८ ॥
काल बिडारत कर्म खुलावत । मन माया से लेती जंग ॥ ९ ॥
घट में धावत आनंद पावत । हिया उमगावत संसय भंग।१०।
झिझक हटावत क़दम बढ़ावत । दूत दुष्ट सब होत तंग ॥११॥

सुरत जीत कर निज घर आई ॥ १६ ॥

प्रे० बा० ४ न० श० ३१ (शब्द ३४)

सुरतिया करत रही । गुरू दर्शन सहित उमंग ॥ १ ॥
मोहित हुई सुनत गुरु वचना । चढ़त सवाया रंग ॥ २ ॥
भक्ती रीति लगी अब प्यारी । गुरु भक्तन का धारत ढंग ३
जग जीवन की प्रीत तियागी । प्रेमी जन का करती संग ४
छोड़ झिझक करती गुर सेवा । प्रेम गुरू छाया अंग १ ॥५॥
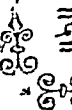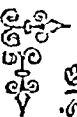
ऐसा औसर फिर नाहिं मिलही । जम को कूट यौर घर चलही १०
गुरु संग जुग सीधा घर जावे । रस्ते में कोई विघन न आवे ११
गुर पद परस लाल होजावे । सतपुर जाय सेत पदपावे ॥१२॥
धुन मुरली और बीन सुनावे । सतगुरु चरन परस हरखावे १३
अलख अगम घर निरख निहारे । धाम अनामी अधर सिधारे
राधास्वमी चरन धार परतीती । काल और माहकाल दलजीती
अस चौपड़ राधास्वामी खिलाई ।

पूरे गुरु से मिल धर प्रीत । जुग बांधोकर दृढ़ परतीत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित उन संग घर चलना ।
चोट न खाओ काल वल दलना ॥ ५ ॥
काल दूत जो बिघन करावें । मार कूट उन तुरत हटावें ॥६॥
खेत जिताय चढावें रंग । दूर करावें सब बदरंग ॥ ७ ॥
तीन धार के पासे डाले । सुखमन होय सुरत घर चाले ॥८॥
दांव पड़ा मेरा अब के भारी । सतगुरु मिल मोहि आप सम्हारी ९
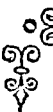
रहा मैं जग में नीच नकार । मेहर से राधास्वामी कीन उधार
प्रेम अंग सेव करूं दिन रात । दई राधास्वामी अचरज दात
नित्त गुरु महिमां गाय रहूं । चरन राधास्वामी ध्याय रहूं ॥१६

प्रे० बा० ३ नं० श० २१ (शब्द ३३) सफा ५६३

ऐसी चौपड़ खेलो जग में । लाल होय पहूंचो गुरु पद में ॥१॥
माया काल से बाज़ी लाग । होय हुशियार जगत से भाग ॥२॥
सुरत गोंट चौपड़ में अटकी । बिन सतगुरु चौरासी भटकी ३

प्रेम गुरु हिरदे बढ़ता सार। सरन दृढ़ करता तन मन वार
सुरत धुन संग अमीं रस लेय। मेहर गुरु दाना छिन २ देय
सुनत रही घंटा संख पुकार । गगन में होती गरज अपार
सुन्न में डारी सारंग धूम। भंवर धुन मुरली सुन २ झूम ॥१०.
अमरपुर सूरत हो गई सार। किया फिर अलख अगम से प्यार
परे चढ़ दरशन राधास्वामी पाय। भाग जुग २ के लीन जगाय
आरती अद्भुत लीनी साज । किया राधास्वामी पूरन काज

प्रे० बा० १ नं० श० १०२ (शब्द ३२) सफा ५७२

चरन गुरु हिये में भक्ति जगाय । शब्द गुरु सन्मुख आई धाय ।
उठी धुन घट में घोरम्घोर । घटा अब काल करम का ज़ोर ॥२
काम और लोभ रहे मुरझाय । अहंग और क्रोध रहे शरमाय
दया गुरु हुआ काल बल छीन । थाक रहे माया और गुन तीन
दीनता अब नित बढ़ती जाय । मान और मोह नहीं ठहराय ५
ईरखा चित से डार दई । ममत और माया बिसर गई ॥ ६ ॥

भूल और भरम निकाल दिये। चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ लिये
मौज पर दीन्हे कारज छोड़। शब्द संग रहूं सुरत को जोड़
दया राधास्वामी परख रही। शब्द धुन घट में सुनत रही॥ १२
दया गुरु चढ़ू गगन को धाय। संख धुन घंटा मृदंग बजाय
सुन्न धुन सुनकर, चलू आगे। बांसुरी बीन जहां बाजे॥ १४॥
चरन फिर सतपुरुष के परस। अलख और अगम का पाऊं दरस
लिपट रहूं राधास्वामी चरनन धाय। नाम राधास्वामी छिन२ गाय

सुना जब गुरु संगत का भेद। धरी मन दर्शन की उम्मेद ३
साधसंग आया गुरु दरबार। होत जहां निसदिन जीव उबार
दरस गुरु जागा मन में प्यार। रहा गुरु चरनन निश्चय धार
शब्द गुरु धारा मन बिस्वास। त्याग दई जग भोगन की आस
करूं गुरु सेवा सहित हुलास। दया गुरु पाऊं चरन निवास
लगें गुरु सतसंगी प्यारे। प्रीत उन रहूं मन में धारे॥ ८ ॥
बचन गुरु सुन २ हरखाता। हुआ मन चरन सरन राता

अमीं का सागर प्रेम स्वरूप । सुरत अब निरखा अदभुत रूप
कहूं क्या महिमां राधास्वामी धाम।
गाऊं मैं छिन २ राधास्वामी नाम १५
दया मोपै राधास्वामी अस कीनी। सुरत हुई चरनसरन लीनी
प्रे० वा०१ नं० श० ९८ (शब्द ३१) सफ़ा ५६३

प्रीत गुरु अब मन में जागी । सुरत हुई धुन रस अनुरागी ।१
बहुत दिन जग में रहा भरमान। न सूझी जीव लाभ और हान

गगन में सूरज गुल फूला । करम के कट गये सब सूला ७
सुन्न में खिली चांदनी सार । बजत रही जहां धुन रारंकार ८
भंवर मन वैठा जाय हुशियार । बांसुरी सोहंग संग सम्हार ९
अमरपुर अचरज धुन बाजी । हुए गुरु सत्तपुरुष राज़ी १०
अलख में पहुंची धर कर प्यार । अगमपुर देखा वार और पार
चरन में राधास्वामी पहुंची धाय । लई वहां आरत प्रेम सजाय
मगन हुई अचरज दरशन पाय । भाग जुग २ के लीन जगाय

प्रे० वा० १ नं० श०६५ (शब्द ३०) सफ़ा ४६९

खिली घट कंवलन की फुलवार । सुनत रही सूरत धुन झनकार १
प्रेम की सींचत नित क्यारी । शब्द धुन लागी फुलवारी २
बाढ़ दृढ़ परतीत की साजी । घाट तज माया रही लाजी ३
वचन की पौद रखाऊं झाड़ । राहित के फल और फूल सम्हार ४
करत मन माली सेवा निरत । शब्द की डोरी संग रहे चित्त ५
सुरत की वेल चढ़ी आकाश । सहसदल कंवल फोड़ किया बास ६
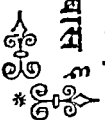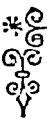
मेहर कर खोलो प्रेम दुआर । चढ़ाओ सूरत नौ के पार ॥१०॥
सहस दल जोत जगाऊं सार । पाउं फिर दरशन गुरु दरबार
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय । गुफ़ा में मुरली लेउं बजाय १२
वहां से सतपुर पहुंचूं धाय । पुरुष का हरखूं दरशन पाय
अलख और अगम लोक के पार । जाऊं राधासामी पै बलिहार
प्रेम अंग आरत करूं बनाय । दरस राधास्वामी छिन २ पाय
मेहर से काज हुआ सब पूर । सुरत हुई राधास्वामी चरनन धूर

सुरत के बान चलाऊं सार। चरन गुरु राखूं हिरदे धार॥३॥
विकल मन तड़फत हैं दिन रैन। करूं गुरु दरशन पाऊं चैन ४
गुरू मेरे प्यारे दीन दयाल। सरन दे मुझको किया निहाल ५
करें गुरु मेरा पूरा काज। मेरे तन मन की उन को लाज ६
करूं मै विनती वारंवार। गुनह मेरे बख़शो दीन दयाल ७
सुरत मन लीजे आज सम्हार। बहत हूं काल करम की धार
चरन पै छिन २ जाऊं पलिहार। गुरू मेरे प्यारे सत करतार

राधास्वामी पुरुष अपारा । मुझ नीच अधम को तारा
मैं तो छिन २ महिमा गाता री
मेरे उमंग उठत दिन राती । निज चरन प्रेम सुत राती
मैं तो दासन दास कहाता री

प्रे० वा० १ नं श० १ (शब्द २९) सफ़ा ३००

उमंग मेरे उठी हिये में आज । करूं अब आरत गुरु की साज१
दीन दिल थाली लेउं सजाय । बिरह की जोत अनूप जगाय २

घंटा और संख वजाता री
सुत वहां से चली अगाड़ी । अब पहुंची गुरु दरबारी
धुन मिरदंग गरज सुनाता री
सुन में जाय किये अश्नाना । धुन मुरली गुफ़ा पहिचाना
सतपुर में वीन वजाता री
फिर अलख अगम को निरखा । घर आदि अनादि परखा
राधास्वामी चरन समातारी ॥

जो चाहो अपना उधारा । गुरु चरनन धरो पिग्रारा ।
जग जीवन आंख सुनातारी ॥ ८ ॥
गुरु प्रेमी जीव पियारे । गुरु चरन सरन आधारे
मैं तो उन संग प्रीत बढ़ाता री
गुरु दरशन पर बल जाऊं । सोभा मैं कस २ गाऊं
मैंतो तन मन वार धराता री
गुरु दया करी अब भारी । सुत सहस कंवल पग धारी

गगना मे शब्द बजातारी ॥ ४ ॥

आरत की उमंग उठाई। सामां सब लेकर आई।
गुरु सन्मुख आरत गातारी ॥ ५ ॥
गुरु दया दृष्ट अब कीनी। मेरी सुरत हुई लौ लीनी।
मैं तो हुआ प्रेम रंग रातारी ॥ ६ ॥
करमी जिव अंधे धुंधे। सब फंसे काल के फंदे।
बिन सत गुरु कौन बचातारी ॥ ७ ॥

मेरे सत गुरु जग में आये । भौ सागर जीव चिताये ।
मैं तो उमंग २ गुन गातारी ॥ १ ॥
सत संग कर प्रीत जगाई । सेवा कर प्रेम चढ़ाई ।
मैं तो नित २ चरन धियातारी ॥ २ ॥
मेरे करम भरम सब काटे । गुरु चरन वहीं मैं चाटे ।
अब काल न मोहि सताता री ॥ ३ ॥
घट में निज पूजा करता । सुत चरन कंवळ में धरता ।
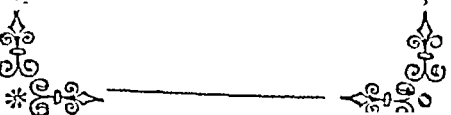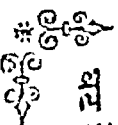
रतनन के भंर खज़ाने । अमृत के कुंड दिखाने ॥ ११ ॥
हीरों की खान खुलानी । लालन की देस निशानी ॥ १२ ॥
सूरज और चांद अनंता । तारों का मंडल बंधता ॥ १३ ॥
रंभा जहं गावें बानी । हंसन गति अजब कहानी ॥ १४ ॥
सुरत हृद २ हरषानी । महिमां क्या करूं बखानी ॥ १५ ॥
यह भेद सार बतलाया । राधास्वामी सब दिखलाया ॥ १६ ॥
प्रे० बा० १ नं० श० २२ (शब्द २८) सफा २३७

धुननाम मिले जहं मोती । सूरत अब लडियां पोती ॥ ४ ॥
सिंगार किया सुत अपना । पति मिला छोड़ जग सुपना ॥५॥
अनहद धुन अजपा जपना । सुनर इस तन से हटना ॥ ६ ॥
कामादिक मन से तजना । गुरु शब्द माहिं नित लगना ॥७॥
नभद्वारा लागा फटने । लगी नींद भूख अब घटने ॥ ८ ॥
अमृत रस मिला अधर में । पहुंची अब सुख सिखर में ॥९॥
लीला अब देखी न्यारी । वर्णन सब करूं संम्हारी ॥ १० ॥

सुनर वानी सुरत समानी। अलख अगम की फिर गत जानी
पद अनाम कुछ कहा न जाई। देश संतका निज कर पाई १५
अब आरत यह पूरण करहूं। राधास्वामी छिनर भजहूं ॥१६॥

सा० नं० श० १९ (शब्द २७) सफ़ा ७२७

गुरु नाम रसायन दीना। दारिद्र हुआ सब छीना ॥ १ ॥
सुख रास मिली घट अंतर। धुन शब्द गही गगनन्तर ॥ २ ॥
सुख सागर ग़ोता मारा। भौसागर त्यागा भारा ॥ ३ ॥

झुंडर उनके सब भागे । सुरत शब्द ले चाली आगे ॥ ७ ॥
ब्रह्म देश जहं नाद अस्थाना । धुन अनंत जहं वेद ठिकाना॥८॥
नाग फांस डारी जहं काला । गरुड़ शब्द से काटा जाला ॥९॥
फिर सतगुरु जब भये सहाई । विघन अनेकन दूर बहाई॥ १०
चौंक चांदनी घट के पारा । पार ब्रह्म का रूप निहारा ॥११॥
महासुन्न सागर गंभीरा । पार किया दई सतगुरु धीरा ॥१२॥
भंवर गूफ़ा जाय द्वारा खोला । सतपुर्ष तब बानी बोला ॥१३॥

सा० नं० श० ४ [शब्द २६] सफा ६९०

दास आरती नई बनाई ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत घट भीतर आई । सहस कंवल दल सन्मुख लाती
तिल का थाल मर्दुमक बाती । सोत पोत लख ऊपर जाती॥३॥
चक्र फेर फर जोत जगाती । घाटी वंक मध्य होय धस्ती
सुन्न निरख फिर धुन को सुन्ती । और डंकनी अमल पसारा ॥ ५ ॥
तहां संखनी करै पुकारा । धुन के बान छुटे बहु तबही ६
शब्द कमान हाथ लई जबही ।

कौन सुने अब गरु बिन मेरी । उन बिन को कर्म काट ॥ १० ॥
सेवा करूं सरन दृढ़पकड़ूं । तो धरें मेहर का हाथ ॥ ११ ॥
चले सुरत फिर शब्द सम्हारे । सुनं सुन्न विख्यात ॥ १२ ॥
सहस कंवल चढ़ त्रिकुटी आवे । गया दसम दर फाट ॥ १३ ॥
महासुन्न से भंवर गुफ़ा तक । सत्तनाम की पाई चाट ॥ १४ ॥
अलख अगम का लगा ठिकाना । राधास्वामी निरखा ठाट १५
आरत करूं प्रेम से पूरी । काल बली की कीन्ही बात ॥ १६ ॥

सहस कंवल त्रिकुटी लख लीला।
सुन्न महासुन खेलत सीला ॥ १४ ॥
भंवरगुफा सतलोक दिखाई। अलख अगम की छवि चित भाई
राधास्वामी दीन अवाज़ा। चलो सुरत घर अपना पाजा ॥ १६

सा० नं० श० ९ (शब्द २५) सफा ६७४

प्रेमन दूर देश से आई। चलो सतगुर की हाट ॥१॥
विरह विमल अनुराग चढ़ाई। लगो अब सतगुर घाट ॥ २ ॥
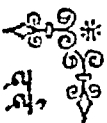
दर्द दिवानी हो मस्तानी। खोलो गगन कपाट ॥ ३ ॥
गुर की महिमां अगम वखानी। समझ २ मुसक्यात ॥ ४ ॥
वचन वान गुरु अधिक चलाये। गया कलेजा फाट ॥ ५ ॥
कहां लग कहूं खोट इस मन की। चले न सतगरु वाट ॥ ६ ॥
अमृत सागर गरु वतलाया। यह नित विषया खात ॥ ७ ॥
शब्द निशानी पूरन वानी। सो गरु किन्ही दात ॥ ८ ॥
मन वौराना विषय दिवाना। उलटा भरमा जात ॥ ९ ॥
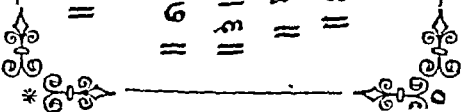
वा रमवार देश को धावत ॥ १० ॥
सतसंग में रहना नाहिं चाहत ।
धन तिरिया की याद चढ़ावत ॥ ११ ॥
तासे सतगुरु मत को फेरो ।
तुम चरनन कर निस दिन चेरो ॥ १२ ॥
सुरत चढ़ाओ गगन शब्द में ।
निरत जमावो धुनन अवध में ॥ १३ ॥
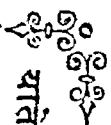
याते पार उतारो तारी ॥ ५ ॥
मन तन मोर करत नहिं काजा ।
सेवा भजन करत करे लाजा ॥ ६ ॥
संत समागम दुर्लभ भाई । सो किरपा से मिल्यो मोहि आई
कौन भाग अब उदय हमारा । याते दर्शन पायो तुम्हारा
दूर देश से चलकर आयो । और काल बहु विघन लगायो ॥७॥
मन उचाट कर चित भरमावत ।
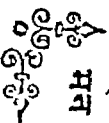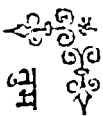
तुम हो दीन दयाल कृपाला ।
बंधन काट करो प्रति पाला ॥ २ ॥
मैं किंकर अति अधम उदासी ।
तुम्हरी गति सब पर अवनाशी ॥ ३ ॥
मैं कहा जानूं भेद तुम्हारा ।
विषय भोग मेरा सदा अहारा ॥ ४ ॥
काल कला की धारा भारी ।
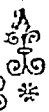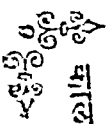
भंवर गुफा में धस् गई सूरत । सोहंग शब्द सम्हाला हो ।२२।
सत्यलोक में चढ़कर पहुंची । निरखा पुरुष निराला हो ॥१३॥
अलख अगम गुरु मेहर कराई । आगे मारग चाला हो ॥१४॥
मगन हुई निज दरशन पाये । राधास्वामी महा किरपाला हो

सा० नं० श० २० (शब्द २४) सफ़ा ५८५

क्यों कर करूं आरती सतगुर ।
बल नाहिं धरूं प्रेम का निजउर ॥ १ ॥

घट में प्रेम वढावत दिन २। काटा माया जाला हो ॥ ५ ॥
करम धरम सव दूर हटाये। सवहि विकार निकाला हो ॥६॥
पांचों दूत रहे मुरझाई। हाराकाल कराला हो ॥ ७ ॥
निरमल होय चढ़ी सुत घट में। झांका गगन शिवाला हो॥८॥
मगन होय सुत धुन रस लेती। पीती प्रेम पियाला हो ॥९॥
सुन में जाय मानसर न्हाई। धारा रूप मराला हो ॥ १० ॥
महासुन्न में थक कर वैठा। महाकाल मतवाला हो ॥ ११ ॥

दया मेहर उन क्या करूं चरनन में चरनन बलिहारा हो ॥१५॥

प्रे० बा० ६ नं० श० ४ (शब्द २३) सफा ४१०

जीव उबारन जग में आये। राधास्वामि दीन दयाला हो ॥टेक
दरशन दे हिये प्रीत जगाई। सब को किया निहाला हो ॥ १ ॥
सतसंग में निज भेद सुनाया। सुरत शब्द मत आला हो ॥२॥
जुगत बताय लगाया घट में। बोल सुनाया बाला हो ॥ ३ ॥
मन और सुरत समेटे तिल में। खोला घट का ताला हो ॥४॥

ध्यान धरूं नित घट में उनका देखूं रूप पियारा हो ॥ ८ ॥
सूरत लगाय शब्द संग धाऊं निरखुं जोत उजारा हो ॥ ९ ॥
त्रिकुटी छोय चढ़ी ऊंचे को न्हाई वेनी धारा हो ॥ १० ॥
भंवरगुफा का लखा उजारा महासुन्न के पारा हो ॥ ११ ॥
आगे चढ़कर सुनी बीन धुन सतपुरुष दरबारा हो ॥ १२ ॥
आरत कर २ मगन हुई अब लखा वार और पारा हो ॥ १३॥
ले दुरबीन चली आगे को राधास्वामी दरस निहारा हो ॥१४

शब्द भेद दे जीव चतावें करें सहज छुटकारा हो ॥ १ ॥
सहज अभ्यास करें सब कोई जुगत कहीं निज सारा हो ॥२॥
चरन सरन दे जीव उबारे काटे करमन भारा हो ॥ ३ ॥
अपना बल दे कार करावें देते गुप्त सहारा हो ॥ ४ ॥
कस २ महिमां गाऊं उनकी कीनी दया अपारा हो ॥ ५ ॥
मैं अति नीच निकाम अनाड़ी आन पड़ी उन द्वारा हो ॥ ६ ॥
दया मेहर से वचन सुनाये लीना मोहि सुधारा हो ॥ ७ ॥
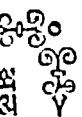
अलख अगम के पार पहुंच कर।
राधास्वांमी चरनग टेका माथ ॥ १२ ॥
तेज पुंज वह देस अनूपा। अद्भुत सोभा वरनी न जात ॥ १३ ॥
अगनित सूर चंद्र प्रकाशा। फिंगरे २ रहे बसात ॥ १४ ॥
दया मेहर जस राधास्वमी कीनी। महिमा उसकी को कह गात

प्रे० बा० ३ नं० श० २ [शब्द २२] सफा ४०७

राधास्वामी दाता दीन दयाला किया भारी उपकारा हो॥टेक
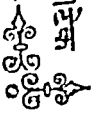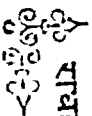
हंसन संग विसास करात ॥ ८ ॥
धुन झनकार उठत जहां भारी ।
नाचत गावत शांति सुख पात ॥ ९ ॥
महाक्षुन्न होय धसी गुफ़ा में ।
मधुर २ मुरली धुन आत ॥ १० ॥
सत्त पुरुष का रूप निहारा ।
सत्त शब्द जहां बीन बजात ॥ ११ ॥
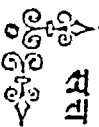
सात्वकी रहन रहत अस औसर।
गुरु चरनन में लगन लगात ॥ ६ ॥
मेहर पाय सुर्त चढ़त अधर में।
गगन गुरू के दरशन पात ॥ ६ ॥
गरज २ धुन ओ अंग गाजे।
काल करम जहां रहे लजात ॥ ७ ॥
निरमल होय चढ़ी ऊंचे को।

घट में अति आनंद समात ॥ १ ॥
जोत उजार होत निज घट में ।
घंटा संख मधुर धुन गात ॥ २ ॥
हरख २ मन उमगत घट में ।
रस पीवत सुर्त अधर चढ़ात ॥ ३ ॥
माया काल लजत निज कौतक ।
छिन २ हियरे प्रेम बढ़ात ॥ ४ ॥
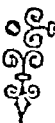
दरस पुरश का पाय अमरपुर ।
अलख अगम को निरखा जाय ॥ १४ ॥
राधास्वामी किया सब काज मेहर से
उनके चरनसे रही लिपटाय ॥ १५ ॥

प्रे० बा० २ नं० श० २७ (शब्द २१) सफा ४५१

कोइ निरखो अधर चढ़ पिछली रात ॥ टेक ॥
अमीधार पल २ हिये झिरती ।

सुमिरन ध्यान भजन की जुगती । ले गुरु से रहूं नित्त कमाय
मन रहे दीन लीन चरनन में । सुरत शब्द संग अधर चढ़ाय
सहस कंमल धुन घंटा सुनती । जोत रूप दरसाय ॥ १० ॥
गगन जाय निरखत गुरु मूरत । धुन मिरदंग और गरज सुनाय
राग रागनी गावत सुन में । धुन किंगरी सारंग वजाय ॥ ११ ॥
सेत सूर लख भंवर प्रकाशा ।
मुरली संग सोहंग धुन गाय ॥ १३ ॥

सुरतिया प्रेम भरी । रही सतगुरु हिरदे छाय ॥ १ ॥
बाल समान गोद गुरु खेलत । हिये दृढ़ सरन बसाय ॥ २ ॥
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे । चित में नित रहे हरखाय ॥ ३ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी । आस बास गुरु चरनन लाय ॥ ४ ॥
ऐसी निरमल भक्ति कमावत । उमंग २ सेवा को धाय ॥ ५ ॥
बचन गुरू सुन बिगसत मन में । नई २ प्रीत जगाय ॥ ६ ॥
चरनन में नित सरधा बढ़ती । महिमा चित में अधिक समाय

सेवा करके गुरु रिझाऊं । पाऊं राधास्वामी दया अपार ॥ १०
करम भरम सब दूर बहाये । पकड़े राधास्वामी चरन सम्हार
सुरत चढ़ी नभ में अब दौड़ी । गगन जाय सुनी धुन ओंकार
सुन और महासुन्न के पारा । भंवरगुफा मुरली झनकार ॥१३
सत्तरूप और अलख अगम लख । गई सुरत अब निज घरबार
मेहर करी निज भाग जगाया । राधास्वामी कीना सहज उद्धार

प्रे० बा० नं० शा० १०८ (शब्द २०) सफा ३५२

औसर पाय मिला साधूसंग । पाया भेद अपार ॥ ३ ॥
उमंग २ करती नित साधन । सुनती धुन झनकार ॥ ४ ॥
प्रेम बढ़ा चरनन में गुरु के । खोजत आई गुरु दरबार ॥ ५ ॥
दरशन पाय हुई मस्तानी । निरख रही घट विमल बहार ॥६॥
दया करी सतसंग में मेला । गुरु ने बचन सुनाये सार ॥ ७॥
परमारथ की कदर जनाई । देखा जगत असार ॥ ८ ॥
दिन २ प्रीत बढ़त गुरु चरना । उमंग उठत हिये में हरबार ९
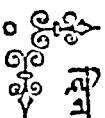
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में। पहुंची जैसे विहंग ॥ १२ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर। सब से हुई असंग ॥ १३ ॥
दीन अधीन पड़ी चरनन में। गुरु ने लगाया अपने अंग ॥१४॥
राधास्वामी अचरज दरशन पाये। धारा रंग सुरंग ॥ १५ ॥

प्रे० वा० २ नं० श० १०७ (शब्द १९) सफ़ा ३५०

सुरतिया लाग रही। गुरु चरन अधार ॥ १ ॥
सुन सुन महिमा संत मते की। भाव बढ़ा और जागा प्यार ॥

राधास्वामी चल ले चढत गगन पर। देख काल रहा दंग॥५॥
शब्द शोर मचरहा गगन में। बह रही धारा गंग॥६॥
काम क्रोध अहंकार लोभ सब। हुए आपही तंग॥७॥
छोड़ गये घट घाट पुराना। मन भी हुआ अपंग॥८॥
माया ममता दूर हटाई। छोड़ा नाम और नंग॥९॥
सील सुमत आय थाना कीना। सीखा सतगुरु ढंग॥१०॥
निरभय होय सुन्न में खेलूं। होगई आज निसंक॥११॥

प्रेम प्रीत से आरत साजी । गाय रही मैं सन्मुख ठाड़ ॥१४॥
चरन सरन दे गोद बिठाया । राधास्वामी कीनी मेहर अपार

प्रे० बा० २ नं० श० १०१ (शब्द १८) सफ़ा ३४८

सुरतिया जाग रही । चढ शब्द गुरू के संग ॥ १ ॥
बिरह बिमल अनुराग चित्त धर । धारा सतगुरु रंग ॥ २ ॥
राधास्वामी मेहर परख अंतर में । प्रीत बसी अंग २ ॥ ३ ॥
दरशन कर तन मन सुध भूली । जैसे दीप पतंग ॥ ४ ॥

नींद भूख आलस सब छोड़ा। चढ़ा रहे नित प्रेम खुमार ॥७॥
गुरु के रंग रंगी सुरत रंगी। त्याग दिया सब जग व्यौहार ॥८॥
छिन २ भाग सराहत अपना। माया काल रहे दोऊ हार ॥९॥
सुरत शब्द की करत कमाई। सुनत रही अनहद झनकार ॥१०॥
सुन २ धुन पहुंची नभपुर में। बंकनाल धस त्रिकुटी पार ॥११॥
सुन्न के परे महासुन आई। भंवर गुफा सतलोक निहार ॥१२॥
अलख अगम के पार ठिकाना। पाया राधास्वामी चरन अधार

प्रे० बा० २ नं० श० १०५ (शब्द १७) सफा ३४२

सुरतिया मगन भई। गुरु देख दीदार ॥१॥

बचन बान गुरु तान चलाये। सुन २ हुई सरशार ॥ २ ॥

हरख २ गुरु सतसंग करती। भूल गई संसार ॥३॥

प्रेम बढ़ा दिन २ गुरु चरनन। तन मन धन सब दीना वार ॥

गुरु का रूप अनूप हिये में। निरख रही छिन २ कर प्यार ॥५

आठ जाम सुत रहे रंगीली। प्रेम प्रीत का कर सिंगार ॥ ६ ॥

अलख अगम का रूप अनूपा। लख हिये प्रेम अधिक रहा छाय
अचरज धाम निरखती चाली। राधास्वामी चरन रही लिपटाय
प्रेम प्रीत से आरत साजी। राधास्वामी लिये रिझाय ॥ ११ ॥
प्रेम आनंद मिला अति भारी। अब किस को मैं कहूं सुनाय।१२।
अजब धाम पाया मैं सजनी। महिमा ताकी कही न जाय ॥१३
दया करी राधास्वामी प्यारे। लीना मुझको अंग लगाय ॥ १४
छिन२ गुन गाऊं गुरुप्यारे। पल२ राधास्वामी रही धियाय।१५

सुन्न२ धुन तिल फोड़ सिधारी । नभ में पहुंची धाय ॥ २ ॥
घंटा शंख अति धूम मचाई । दरशन जोत दिखाय ॥ ३ ॥
घंक नाल धस त्रिकुटी आई । गरज मृदंग सुनाय ॥ ४ ॥
गुरु का रूप लखाहिये अंतर । अद्भुत सोभा बरनी न जाय
अक्षर रूप लखा सुन माहीं । हंसन संग मिलाप बढाय ॥ ६ ॥
गुरुबल गई महासुन पारा । भंवरगुफा मुरली धुन गाय ॥ ७ ॥
सन्तलोक सतपुरुष रूप लख । मधुर २ धुन बीन बजाय ॥ ८ ॥

सुन्न शिखर चढ़ महासुन्न लख । भंवर गुफ़ा मुरली झनकार ।
सत पुर जाय सुनूं धुन बीना । दरस पुरुष का करूं सम्हार ॥
अलख अगम के लोक सिधारूं । सुनूं गुप्त धुन बानी सार ॥
आगे राधास्वामी चरन निहारूं । प्रेम सहित रहूं आरत धार
मेहर दया राधास्वामी पाई । मगन होय बैठी सरन सम्हार १५

प्रे० बा० नं० २ श० १०४ (शब्द १६) सफ़ा ३४२

सुरतिया मस्त हुई । अब पाया दरश गुरु आय ॥ १ ॥

वचन सुनत मन शांती आई। गुरु चरनन में जागा प्यार ॥४

दीन जान गुरु दिया उपदेशा। शब्द भेद निज सार ॥ ५ ॥

हित चित से अब करूं कमाई। मन और सुरत सम्हार ॥ ६ ॥

बिन किरपा कुछ काज न सरई। मेहर करो गुरु परम उदार

घेर फेर मन घट में लावो। सुरत चढ़ावो नौ के पार ॥ ८ ॥

घंटा शंख सुनूं जाय नभ में। और लखूं वहां जोत उजार ॥ ९

बंकनाल धस निरखूं गुरु पद। सुनूं गरज संग धुन ओंकार
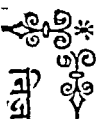
निज़ चरनन में लिया मिलाई ॥ १४ ॥
क्या विधिकर राधास्वामी गुन गाऊं ।
हार मान अब चरन समाऊं ॥ १५ ॥

प्रे० २ नं० श० ३६ (शब्द १५ सफ़ा) २४०

सुरतिया सेव करत। गुरु चरनन हिये धर प्यार ॥१॥
सत संग करत कटे मन भरमा। देखी जगकी किरत असार २
सत गुरु की महिमां मन मानी। गत मत शब्द अपार ॥ ३ ॥
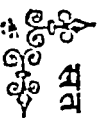
शब्द गुरू से मेल कराई ॥ १० ॥
राधास्वामी अक्षर पुरुष लखाया ।
सुन में रारंग शब्द सुनाया ॥ ११ ॥
राधास्वामी भंवरगुफ़ा दरसाई । मोहन मुरली बजै सुहाई १२
राधास्वामी दया फिर सतपुर लीना ।
अलख अगम का दर्शन कीना ॥ १३ ॥
राधास्वामी वहां से अधर चढ़ाई ।

राधास्वामी दिया शब्द परखाय ।
घट में सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी खोल दिये हिये नैना ।
मोहिं सुनाये घट में बैना ॥ ८ ॥
राधास्वामी पिरथम पाट खुलाया ।
जोत निरंजन पद दरसाया ॥ ९ ॥
राधास्वामी वहां से गगन चढ़ाई ।

राधास्वामी लई मेरी सुरत निकार ॥ ३ ॥
राधास्वामी दियें मेरे बंधन तोड़ ।
राधास्वामी लिया मन चरनन जोड़ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दई जम फांसी काट ।
राधास्वामी खोली घट में बाट ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेट दिये कल अंग ।
राधास्वामी चित से किया निसंक ॥ ६ ॥

परसत चरन अतिकर मगनानी ॥ १५ ॥

प्रे० बा० २ नं० शा० २६(शब्द १४) सफ़ा १७८

राधास्वामी सम कोई मित्र न जग में ।
राधास्वामी प्रीत धरी रग २ में ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन मेरे चित्त बसेरी ।
राधास्वामी बिन जिव फांस फंसेरी ॥ २ ॥
राधास्वामी हिया मांहि शब्द सिंगार ।

राधास्वामी खोला दसवां द्वार ।
सुन धुन सूरत होगई सार ॥ १२ ॥
राधास्वामी भंवर गुफ़ा दिखलाय ।
सतपुर दीनी वीन सुनाय ॥ १३ ॥
अलख अगम का नाका तोड़ ।
राधास्वामी चरन सुरत लई जोड़ ॥ १४ ॥
मेहर करी मोपै राधास्वामी ।

राधास्वामी गत अति अगम अपारा ॥ ७ ॥
राधास्वामी लिया मेरा भाग जगाय ।
राधास्वामी घट में शब्द सुनाय ॥ ८ ॥
राधास्वामी मन और सुरत चढ़ाय ।
तिलपट में दई जोत लखाय ॥ ९ ॥
धुन घंटा और संख सुनाय । राधास्वामी सूरत गगन चढ़ाय
गरज मृदंग मचाया शोर । राधास्वामी दिया काल बल तोड़ ११

राधास्वामी वचन सुनत भ्रम भंगा ॥ ३ ॥
राधास्वामी भेद दिया मोहिं जबही ।
राधास्वामी पर बल गई मैं तबही ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीनी सुरत लखाय ।
राधास्वामी दीना शब्द जगाय ॥ ५ ॥
प्रीत बढ़ी राधास्वामी चरना । धर परतीत गही उन सरना ६
राधास्वामी सत मत अजब मिहारा ।

अभय होय बैठी मगन सतद्वार ॥ १५ ॥

प्रे० बा० २ बं० श० १४ (शब्द १३) सफ़ा १४३

राधास्वामी मौज में दया करी भारी ।

राधास्वामी करें जीव उपकारी ॥ १ ॥

राधास्वामी खैंच लिया चरनन में ।

राधास्वामी रूप बसा नैनन में ॥ २ ॥

राधास्वामी चरन लिया आलंबा ।

हिये में बढ़ता अब अनुराग । सुरत रही शब्द गुरू से लाग १०
गगन चढ़ सुनती धुन ऑंकार । लाल रंग देखा सूर अकार ११
दसम दर खोला पाट हटाय । विमल हुई मान सरोवर न्हाय
महासुन गई गुरू संग दौड़ । भंवर चढ़ मिटी रैन हुआ भोर१३
बीन धुन सुनकर गई सत लोक ।
अलख और अगम का पाया जोग ॥ १४ ॥
परे तिस राधास्वामी धाम निहार ।

दरसन गुरु निरखूं नैन निहार ॥ ३ ॥
घट घट उलटूं नैन घुमाय। सुरत की ताड़ी धुन संग लाय॥४॥
मेहर की दृष्टी गुरु की पाय। सुरत मन नभ में पहुंचे धाय ॥५।
काल अंग मन से दिया निकार। भाव भय जग का दीना टार
प्रेम की गुरु ने की बरखा। मिटी मन सूरत की तिरखा ॥७॥
शब्द धुन बाज रही घन घोर। शंख और घंटा डाला शोर॥८
निरख रही सूरत जोत उजार। गुरु गुन गावत बारंबार ॥९॥

होय निचिंत चरन गह बैठी । राधास्वामी कीनी मेहर अपार ॥

ग्रं० चा० २ नं० श० ४२ (शब्द १२) सफ़ा ८५

दीन दिल हिये अनुराग सम्हार ।
दास करे आरत साज सँवार ॥ १ ॥
हिये का थाल सजाऊं आज ।
बिरह की जोत जगाऊं साज ॥ २ ॥
गाऊं गुरु आरत उमंग सम्हार ।

अनहद बाजे गाजन लागे । बरसत अमृत धार ॥ ८ ॥
भीजत मन सींझत सूरत प्यारी । गावत गुरु गुन सार ॥ ९ ॥
चढ़न अधर पहुँची दस द्वारे । मान सरोवर मैल उतार ॥ १०
पर: जाय मुरली धुन पाई । सतपुर दर्शन पुर्ष निहार ॥ ११ ॥
अलख अगम की सुन २ बतियां । होय गई अब सब से न्यार
राधास्वामी रूप निरख हिये नैना । मगन हुई अब सूरत नार
हेरत २ धामा । अचरज २ शोभा धार ॥ १२ ॥

सुरत रंगीली सतगुर प्यारी । लाई आरती धार ॥ १ ॥

भूखन वस्तर अनेक लायकर । कीना गुरु सिंगार ॥ २ ॥

अचरज रूप सोभा बाढ़ी । उमगा हियें अति प्यार ॥ ३ ॥

सत संगी सब जुड़ मिल आए । देखें विमल बहार ॥ ४ ॥

हरख २ सब नाचें गावें । बाढ़ी उमंग अपार ॥ ५ ॥

राधास्वामी दया दृष्टि अब कीनी । मगन हुये नर नार ॥ ६ ॥

सीत प्रशाद की बरखा कीनी । पावत सब मिल झाड़ ॥ ७ ॥

निरख फिर घट में जोत उजार। गगन गुरु धारूं हिये में प्यार
सुन्न चढ़ लखा भंवर अस्थान। लगा धुन मुरली से अब ध्यान
अमर पुर किये सतगुरु दर्शन। वार रही तन मन गुरु चरनन
अलख गुरु लीना चरन मिलाय। अगम गुरु मेहर करी अधिकाय
दया राधास्वामी की गहिरी। सुरत जाय उन चरन ठहरी ॥ १८
परम पद संतन का यह धाम। उठत जहां छिन२ धुन निज नाम

प्रे० बा० २ नं० श० २४ (शब्द ११) सफा ४९

जपत रहूं निसदिन राधास्वामी नाम ।
धार रहूं हिये में भक्ति अकाम ॥ ४ ॥

करें गुरु सब विधि मेरा काज । देयं मोहि बख्शिश भक्ती राज॥
उमंग मन गुरु सेवा में लाग । बढ़ावत छिन२ अपना भाग॥६॥

मेरे मन चिन्ता यही समाय । लेउं मैं किस विधि गुरू रिझाय
दीन ढंग मांगू गुरु की मेहर । हटाऊं मन की सबही लहर॥८
चरन में चित नित जोड़ रहूं । शब्द धुन सुन नभ फोड़ चढ़ूं ॥

करे राधास्वामी धाम निवास ॥ १४ ॥
दीन दिल आरत राधास्वामी धार ।
अमींरस पीऊं जाउं बलिहार ॥ १५ ॥

प्रे० बा० नं० श० ९ [शब्द १०] सफा १५

हुआ मन गुरु चरनन आधीन । लखी गुरु मूरत घट में चीन॥
भरोसा गुरु चरनन में लाय । प्रेम गुरु छिनर रहूं जगाय ॥२॥
टेक गुरु धारी कर विस्वास । मगन होय करता चरन निवास
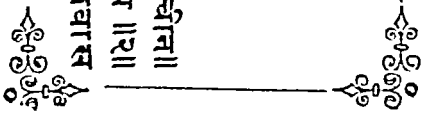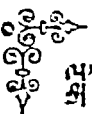
सुरत मन पकड़ शब्द की डोर। चढ़ैं अब घट में परदा फोड़॥
सहसदल लखें जोत उजियार। सुनै जहां घंटा शंख पुकार।१०
निरख त्रिकुटी में गुरु सूरत। चढ़ाऊं सुन में फिर सूरत ॥११
होय तन मन से सुरत अकेल। करत जाय हंसन संग कुलेल॥
धार हिये सतगुरु चरनन आस ।
भंवर चढ़ पाय अमरपुर वास ॥ १२ ॥
अलख और अगम का देख विलास ।

सिखाया सुरत शब्द मत सार ॥ ३ ॥

बुलाया चरनन में हर बार । टिकाया सतसंग में कर प्यार।४

करम और भरम किये सब दूर । प्रीत दई चरनन में भरपूर।५।

मेहर मोपै अंतर में कीन्ही । सुरत हुई शब्दारस भीनी ॥६॥

बढ़त मेरी चरनन में परतीत । जागती दिन २ नई २ प्रीत ॥७॥

करत रहूं बिनती राधास्वामी पास ।

दिखाओ घट में परम बिलास ॥ ८ ॥

रही मैं नित उन आरत गाय ।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥ १५ ॥

प्रे० वा० १ नं० श० १११ [शब्द ९] सफा ५९२

रहा मैं बहु दिन मिपट अजान ।
करी नहिं सतगुरु की पहिचान ॥ १ ॥
लिया मोहिं आपहिं खैंच बुलाय । दयाकर लीना चरन लगाय
करी मोपै राधास्वामी दया अपार ।

देख सतपुर की लीला सार । गुरू का गाऊं गुन हरबार॥११॥

गई फिर अलख लोक पगधार ।

अगम का खोला जाकर द्वार ॥ १२ ॥

कहूं क्या महिमां अगम दरबार ।

हुई मैं दासी चरन निहार ॥ १३ ॥

परेतिस लखिया राधास्वामी धाम ।

चरन में राधास्वामी दिया विश्राम ॥ १४ ॥

चुनत रहूं सेवा कलियां सार ॥ ५ ॥
दया गुरु फूल और फल लागे। भाग मेरे जुगरके जागे ॥ ६ ॥
शब्द धुन अमृत भर पीया। दरस गुरु अचरज रस लीया॥७
सुरत मन चढ़त गगन की ओर।
संख ओर मिरदंग डाला शोर ॥ ८ ॥
ररंग धुन गाज रही सुन में। भींज रही सुरत भंवर धुन में ।९
बीन धुन मधुर लगी प्यारी। गुरू पर जाऊं बलिहारी ॥१०॥

प्रे० वा० १ नं० श० ८३ [शब्द ८] सफा ५२५

खिले मेरे घट में भक्ती फूल ।
नाम हिये धारा गया जग भूल ॥ १ ॥
प्रेम की क्यारी सींचत मन । चरन गुरु वारत तन मन धन।२
विरह की अगनी नित भड़काय । मोह जग कूड़ा दीन जलाय।
खाद सतसंग की राख सम्हार । दिये मैं पांचो चोर निकार।४।
प्रीत गुरु खिला हिये गुलज़ार ।

सुनूं धुन घंटा नभ के द्वार। गगन में गरज मेघ धधकार ॥११॥
सुन्न में बजती सारंग सार। भंवर गढ़ धुन मुरली झनकार ॥
अमरपुर सुनती बीन सम्हार। अलख और अगम से कीना प्यार
चरन राधास्वामी निरख निहार ।
दिया मैं तन मन उन पर वार ॥ १४ ॥
प्रेम अंग आरत गाऊं सार ।
जाऊं मैं राधास्वामी के बलिहार ॥ १५ ॥

गुरू का वल धर हिरदे मांहिं। मिटाऊं काम क्रोध की छांह ४॥
नाम का धारूं कर हाथियार। हटाऊं काल करम दल झाड़ ॥५॥
मेहर राधास्वामी वरनी न जाय। सुरत मन रहे चरन लौ लाय
रहूं नित सत संग वचन विचार। मोह जग दीना सहज निकार
शब्द का मारग पाया सार। वढ़त अयधुन में नित्त पियार ॥८॥
सुरत मन तजत जगत की आस। चरन मे गुरु के चाहत वास
सरन विन होय न जगसे पार । गुरू से मांगूं सरन अधार ॥

सत्तपुर दरश पुरुष पावे । अलख पुर अगम को चढ़ जावे १
परे तिस राधास्वामी चरन निहार ।
करूं मैं आरत जाऊं वलिहार ॥ १५ ॥

प्रे० जि० १ नं० श० ७९ (शब्द ७) सफ़ा ५१३

चरन राधास्वामी ध्याय रही । निज गुरु महिमा गाय रही॥१॥
नाम का देखूं घट परताप । दया गुरु काटूं तीनों ताप ॥२॥
ध्यान गुरु धरत हुआ मन सूर । करम और भरम हुये सब दूर

कौन विधि करम धरम छुटकाय । कौन विधि दीजे भरम बहाय ।
प्रेम राधास्वामी चरनन धार ।
सरन राधास्वामी हिये सम्हार ॥ ९ ॥
करें जब राधास्वामी मेहर अपार । देय सब छिनमें काज संवार
सुरत मन चढ़े गगन की ओर । शब्द धुन घट में सुन घनघोर
सहस्र दल घंटा संख सुने । गगन में धुन मिरदंग गुने ॥१५॥
सुन्न चढ़ तिरवेनी न्हावे । भंवर में धुन सोहंग गावे ॥ १६ ॥

कौन विधि मन निश्चल होई ।
कौन् विधि चित निरमल होई ॥ ४ ॥

कौन विधि ध्यान हिये में लाय ।
कौन विधि लीजे शब्द जगाय ॥ ५ ॥

कौन विधि नाम चित्त में आय ।
कौनि विधि धुन संग सुरत लगाय ॥ ६ ॥

कौन विधि माया दल जीतूं। कौन विधि सीस काल रेतूं॥ ७॥

प्रे० वा० १ नं० श० ६७ [शब्द ६]सफ़ा ४७४

कौन विधि आरत गुरु धारूं ।
कौन विधि तन मन धन वारूं ॥ १ ॥
कौन विधि मन को लेउं समझाय ।
कौन विधि गुरु को लेउं रिझाय ॥ २ ॥
कौन विधि चित सत संग राखूं ।
कौन विधि गुरु मूरत ताकूं ॥ ३ ॥

सुन्न में वेनी न्हाई री । ररंग धुन सहज बजाई री ॥ ९ ॥
गुफा धुन मुरली गाई री । बीन धुन सतपुर आई री ॥ १० ॥
आरती सतगुरु गाईरी । चरन में राधास्वामी धाईरी ॥ ११ ॥
मेहर गुरु काज बनाईरी । हुये स्वामी आप सहाई री ॥ १२ ॥
लिया गुरु आज रिझाईरी । दया अब पूरी पाईरी ॥ १३ ॥
भेद सब दिया जनाईरी । संत मत कहूं बड़ाईरी ॥ १४ ॥
दास राधास्वामी कहाई री । सदा गुन राधास्वामी गाईरी

दया गुरु मोहिं संवारा री । सीस उन चरनन डारा री ॥ २ ॥
लगा मोहिं सतसंग प्यारा री । वचन सुन भरम बिडारा री ॥ ३ ॥
प्रीत गुरु लीन सम्हारा री । शब्द गुरु मिला सहारा री ॥ ४ ॥
मेहर गुरु काल निकारा री । गया तम हुआ उजियारा री ॥५॥
लखा घट अंतर तारा री । शब्द नभ माहिं पुकारा री ॥ ६ ॥
जोत का रूप निहारा री । सुनी धुन घंटा सारारी ॥ ७ ॥
गई चढ़ त्रिकुटी पारा री । धुनन संग कीन विहारा री ॥ ८ ॥

भंवर में गई सोहंग धुन हेर । गुरू बल महाकाल हुआ ज़ेर ॥ ११
अमरपुर दर्शन सतपुर्ष पाय । नूर सत निरखा बीन बजाय ॥ १२
अधर चढ़ देखा अलख पसार । अगम में पहुंची सुरत सम्हार
परेतिस निरखा राधास्वामी देस । सुरतने धारा अचरज भेस
आरती पूरन कीनी आय । परम गुरु राधास्वामी लीन रिझाय

प्रे० बा० १ नं० श०५८ (शब्द ५) सफ़ा ४५३

चरन गुरु निश्चय धारा री । सरन पर तन मन वारा री ॥ १॥
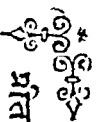
प्रीत मेरे हिये में दृढ़ कर दीन ।
हुआ मन चरनन में लौलीन ॥ ५ ॥
निस्त मैं गाऊं महिमां सार । नाम गुरु सुमिरूं धर कर प्यार ॥६
एक चित होय भजन करती । सुरत धुन संग अधर चढ़ती ७
प्रेम नित हिये अंदर भरती । जोत लख आरत गुरु करती ॥ ८॥
गगन चढ़ गुरु मूरत लखती । काल की कला यहां थकती ॥९।
सुन्न में तिरवेनी न्हाती । रागनी सारंग संग गाती ॥ १० ॥
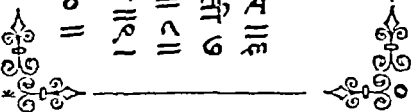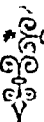
प्रे० वा० १ नं० श० ४६ [शब्द ४] सफ़ा ४२५

हिये में गुरु परतीत बसी । प्रीत संग सूरत शब्द रसी ॥ १ ॥

दरस गुरु कीन्हा सुरत सम्हार ।

सुनत गुरु वचन बढ़ा मन प्यार ॥ २ ॥

वचन सतसंग के चित धारूं । सरन पर जान प्रान वारूं ॥?३ ॥

कहूं क्या महिमां सतगुरु गाय ।

दिया मेरा अदभुत भाग जगाय ॥ ४ ॥
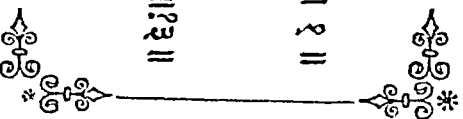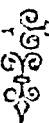
अलख में पहुंची लगन बढ़ाय। अगमपुर दरशन कीना धाय ॥१२

लखा तिस ऊपर राधास्वामी धाम।

सुरत ने पाया वहां बिश्राम ॥ १३ ॥

कहूं कस शोभा निजपुर गाय।

सुरत मेरी छिन २ रही शरमाय ॥ १४ ॥

मिले मोहिं राधास्वामी पुरुष अनाम।

किया मेरा राधास्वामी पूरन काम ॥ १५ ॥

प्रेम मेरे हिरदे दीन बढ़ाय । शब्द धुन हिये में दीन जगाय ॥७॥

करम और भरम दिये सब त्याग ।

चरन गुरु नित बढ़ता अनुराग ॥ ८ ॥

सहसदल सुनती संख पुकार ।

गगन चढ़ पहुंची गुरु दरबार ॥ ९ ॥

सुन्न धुन सारंग गाज रही । भवंर में मुरली बाज रही ॥ १०॥

सुनी धुन बीन अमरपुर जाय । पुरुप का दरशन अद्भुत पाय॥११

गली गुरु चरनन भाग जगाय ॥ २ ॥
भई निज हिरदे गुरु परतीत ।
तजी मन भय लज्या जग रीत ॥ ३ ॥
सुनत रही महिमां सतसंग सार ।
निरख रही घट में नाम उजार ॥ ४ ॥
दरस गुरु प्रत्यक्ष चाह रही । मेहर हुई पास बुलाय लई॥५॥
उमंग कर आरत गुरु धारी । करी गुरु मेहर दृष्ट भारी ॥६ ॥

मेहर से निज घर अपना पाय ॥ १४ ॥
हरख और आनन्द उर न समाय ।
जगत और देह दई बिसराय ॥ १५ ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ४५ (शब्द ३) सफ़ा ४२३

हरख मन सरन गही सतगुरु ।
प्रीत संग धरे बचन निज उर ॥ १ ॥
साध संग शोभा बरनी न जाय ।

संत मत क्या कहूं महिमां गाय ।
सर्व मत उसके नीचे आय ॥ ११ ॥
काल संग रहे सभी लिपटाय ।
गये सब माया संग भुलाय ॥ १२ ॥
सरन गुरु कोई बड़ भागी पाय ।
शब्द की डोरी गह चढ़ जाय ॥ १३ ॥
चरन में राधास्वामी के लौ लाय ।
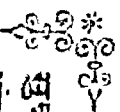
सुन्न में सुनती सारंग सार ॥ ७ ॥
भंवर चढ़ धरा सोहंगम ध्यान ।
सत्तपुर सुनी बीन धुन तान ॥ ८ ॥
अलख लख अगम लोक के पार ।
अनामी पुरुष किया दीदार ॥ ९ ॥
सरन राधास्वामी पाई सार ।
हुई मैं उन चरनन बलिहार ॥ १० ॥
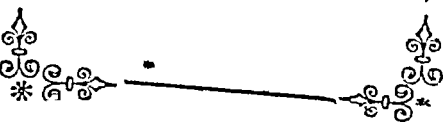
दरशगुरु होवत मनुवां मस्त । निकट कर देखत दूर की वस्त॥३

भेद पाय सुध बुध सब भूली । हिये कंवलन क्यारी फूली ४

मगन मन धुन संग रहा लिपटाय ।
देह तज रहा गगन में छाय ॥ ५ ॥

खिला अब घट में इक गुलज़ार ।
सहस दल जोत सरूप निहार ॥ ६ ॥

गुरू पद निरखा अजब बहार ।

गगन में बाजे अनहद तूर। लखा घट अंतर अद्भुत नूर ॥ १२ ॥
गुरू पद परस गई सुन में। रलीजाय फिर मुरली धुन में ॥ १३
सुनी धुन बीना सतपुर में। अलख लख गई अगमपुर में ॥ १४
परे तिस धाम अनूप दिखाय। चरन राधास्वामी परसे जाय ॥

प्रे० बा० १ नं० श० ४३ (शब्द २) सफ़ा ४१८

प्रीत गुरु हिये अंतर बढ़ती। सुरत मन गुरु चरनन धरती ॥ १
प्रेम रंग लाल हुआ मन मोर। दिये सब घट के बंधन तोड़ ॥

अहंगता दीनी सब जारी । दीनता चरनन में धारी ॥ ६

विरह अनुराग रहे घट छाय । सुरत मन धुन संग रहे लिपटाय ॥

किया राधास्वामी यह सिंगार । गाऊं कस महिमा उनकी सार

चरन गुरु लागी विरह सम्हार । रही मैं अचरज रूप निहार ॥

प्रेम की धारा बढ़ी नियार । करी राधास्वामी दया अपार ॥

गाऊं निज आरत राधास्वामी साज ।

दिया मोहि राधास्वामी अचरज दाज ॥ ११ ॥

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय

प्रे० बा० १ नं० श० ४२ (शब्द १) सफ़ा ४१६

जगत संग मनुआं रहत उदास। चहत गुरु चरनन नित्त विलास ॥
रीत मांहि जग की नहिं भावे। साध संग छिन २ मन धावे ॥
तजत मन अब कृत संसारी। भजत गुरु नाम सुरत प्यारी ॥
काम और क्रोध रहे मुरझाय। चरन गुरु आसा मनसा लाय ॥
लोभ और मोह गये घर छोड़। नाम में राधास्वामी के चित जोड़ ॥

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

पोथी भेद बानी

जिल्द तीसरी